विभागीय गृह पत्रिका

शेवा कृति

वर्ष 2016 प्रथम अंक

प्रधान सीमाशुल्क आयुक्तालय (जनरल), सीमाशुल्क मुंबई अंचल ।।

जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन

न्हावा शेवा, तालुका-उरण,

जिला-रायगड. पिन - 400 707. महाराष्ट्र.

डॉ. हसमुख अढिया, आई.ए.एस.
राजस्व सचिव, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार
का जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में दौरा

डॉ. हसमुख अढिया, आई.ए.एस. राजस्व सचिव का स्वागत करते हुए
श्री. संजीव बिहारी, प्रधान मुख्य सीमाशुल्क आयुक्त,
श्री. राजीव टंडन, प्रधान आयुक्त एवम् अन्य उच्च अधिकारीगण

श्री बी के बंसल, सदस्य, सीबीईसी के जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा दिनांक 17 फरवरी 2016 के दौरे के दृश्य

26 जनवरी 2016 गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियां

67 वें गणतन्त्र दिवस समारोह में जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में राष्ट्रीय ध्वज को सलामी देते हुए माननीय **श्री राजीव टंडन**, प्रधान सीमाशुल्क आयुक्त

67 वें गणतन्त्र दिवस की परेड का निरीक्षण करते हुये **श्री. राजीव टंडन**, प्रधान सीमाशुल्क आयुक्त

प्रधान संरक्षक की अभिव्यक्ति .....

प्रधान संरक्षक

संजीव बिहारी

प्रधान मुख्य सीमाशुल्क आयुक्त

जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा की विभागीय हिन्दी पत्रिका ''शेवा कृति'' का प्रथम अंक आपको सौंपते हुए मुझे असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है। मुंबई सीमाशुल्क के अंचल-II का यह सीमाशुल्क भवन देश के लिए राजस्व एकत्र करने में अग्रणीय भूमिका निभाता चला आ रहा है और अब ''शेवा कृति'' के प्रथम अंक का आगमन इसे परिपूर्णता की आकाशगंगा में एक नई पहचान दिलाएगा। राजस्व उगाही के कार्यों के बीच कर्मचारियों एवं अधिकारियों की रचनात्मकता प्रदर्शित करने का यह प्रथम प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के माध्यम से आप सभी ने राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी निष्ठा भी प्रस्तुत की है। ''शेवा कृति'' में हिन्दी रचनाओं के बड़ी संख्या में प्रस्तुतीकरण से निस्संदेह इस सीमाशुल्क भवन के सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग और उसके प्रचार प्रसार को एक नई दिशा मिलेगी।

हमारी अपनी अभिव्यक्ति वाहिनी ''शेवा कृति'' के माध्यम से मैं यह आशा करता हूँ कि हमारे सभी अधिकारीगण राजभाषा संबंधी प्रावधानों को अपना महत्वपूर्ण सांविधिक दायित्व समझेंगे और इसके अनुपालन में दृढ़ता से आगे बढ़ेंगे।

मेरी ओर से पत्रिका के प्रकाशन के इस प्रथम प्रयास के लिए पूरे संपादन मंडल को साधुवाद। मै पत्रिका के स्वर्णिम भविष्य की कामना करता हूँ।

संजीव बिहारी

संरक्षक की लेखनी से .....

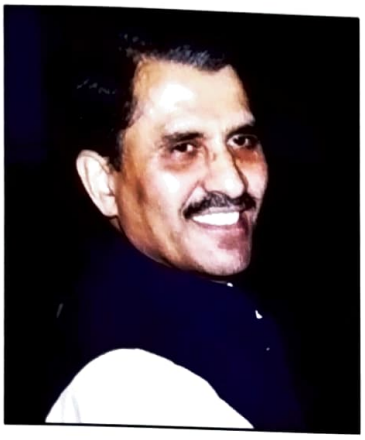

संरक्षक

राजीव टंडन

प्रधान सीमाशुल्क आयुक्त

जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा, सीमाशुल्क मुंबई अंचल ।। की विभागीय हिन्दी पत्रिका ''शेवा कृति'' के प्रकाशन के प्रथम प्रयास को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे व्यक्तिगत रुप से अगाध संतुष्टि और प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है । जिस तरह जीवन में होनेवाला हर प्रथम कार्य अविस्मरणीय होता है, उसी तरह से मेरे लिए भी यह बहुत आत्मसंतुष्टि और गर्व का विषय है कि पत्रिका के नामांकरण से लेकर आज इसके प्रथम अंक के प्रकाशन तक मैं सम्पादन मंडल के साथ हूँ ।

यह सर्वविदित है कि हम राजस्व संग्राहक के साथ-साथ शासकीय सेवक के रूप में राजभाषा संबंधी अधिनियम और नियमों से बंधे हुए है। सरकार की राजभाषा नीति का पालक करना न केवल हम सभी का दायित्व है अपितु यह एक संवैधानिक अपेक्षा भी है। भारत सरकार की राजभाषा नीति, हिन्दी को प्रेरणा और प्रोत्साहन से लागू करने की रही है। मैं ''शेवा कृति'' के माध्यम से सभी को राजभाषा संबंधी दायित्वों से अवगत कराते हुए अपील करता हूँ कि हिन्दी के प्रचार प्रसार संबंधी सभी गतिविधियों में पूरे मनोयोग के साथ अपना सक्रिय योगदान दें ताकि जनवाणी के साथ-साथ सरकारी तंत्र में भी राजभाषा हिन्दी सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर सके ।

सभी रचनाकार एवं सहयोगी पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई के पात्र हैं । ''शेवा कृति'' के सफल एवं निरंतर प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनायें ।

राजीव

राजीव टंडन

संपादकीय....

डॉ. आशिर त्यागी
अपर सीमाशुल्क आयुक्त

मैं, सर्वप्रथम जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा के सीमाशुल्क परिवार के सभी सदस्यों, रचनाकारों एवं सहयोगियों को भावपूर्वक बधाई देता हूँ जिनके प्रयास स्वरुप विभागीय हिन्दी पत्रिका ''शेवा कृति'' का प्रथम अंक आज हमारे समक्ष मूर्त रुप से आ सका।

''शेवा कृति'' का प्रकाशन एक ओर तो सभी अधिकारियों को अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करता है तो दूसरी ओर अपने कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करने के आत्मविश्वास को बढ़ावा देता है। केंद्र सरकार का कार्यालय होने के नाते राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियमों का पालन करना एवं करवाना न केवल राष्ट्रीय कर्तव्य है वरन यह हमारा नैतिक दायित्व भी है। ''शेवा कृति'' के प्रकाशन से राजभाषा हिन्दी के प्रति एक अनुकूल वातावरण बनने में बहुत सहायता मिलेगी। साथ ही साथ राजभाषा की संवेदनशीलता को समझने और कार्यालय सहयोगियों के मध्य इसके प्रचार-प्रसार हेतु सजग प्रयास करने की प्रेरणा भी मिलेगी।

''शेवा कृति'' प्रथम बार आपके समक्ष प्रस्तुत हुई है, आपकी अमूल्य प्रतिक्रियाएं, सुझाव, प्रशंसा एवं आलोचनाएँ आदि..... सभी स्वागत योग्य है, कृपया हमें अवगत कराएं ताकि भविष्य में आनेवाले ''शेवा कृति'' के अंको को और भी सार्थक और समृध्द बनाया जा सके।

शुभकामनाएं .....

आशिर त्यागी

डॉ. आशिर त्यागी

विभागीय गृह पत्रिका

जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा
सीमाशुल्क मुंबई अंचल ।।

शेवा कृति

वर्ष 2016

प्रथम अंक

प्रधान संरक्षक
संजीव बिहारी
प्रधान मुख्य सीमाशुल्क आयुक्त

संरक्षक
राजीव टंडन
प्रधान सीमाशुल्क आयुक्त

उप संरक्षक
डी. के. श्रीनिवास
सीमाशुल्क आयुक्त

उप संरक्षक
सुभाष अग्रवाल
सीमाशुल्क आयुक्त

संपादक
डॉ. आशिर त्यागी
अपर सीमाशुल्क आयुक्त

सहयोग
रुपेश एस सक्सेना
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

नोट : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, उनसे संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

।। सरस्वती वंदना ।।

वर दे वीणा वादिनी वर दे
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे;
काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननी, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलषु-भेद तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे;
नव गति, नव लय, ताल-छन्द
नव नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव,
नव नभ के नव विहग वृंद को,
नव पर, नव स्वर दे ।

-पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

''शेवा कृति''

विषय सूची

क्रम	रचना	रचनाकार/ संकलनकर्ता	पृष्ठ संख्या
1.	सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग–कैसी हिचक, कैसी शंका !	रुपेश एस सक्सेना	4
2.	कविता संग्रह : ये दुनिया हमने देखी है, तबादले	धनंजय मौर्य	7
3.	क्या हम प्रौद्योगिक के दास बन गए हैं	धर्मेंद्र कुमार	8
4.	कविता संग्रह : अलौकिक भारत, मंजिल	धर्मेंद्र कुमार	10
5.	जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क, न्हावा शेवा से सम्बन्धित कुछ तथ्य	रिपोर्ट	11
6.	अविस्मरणीय प्रसंग	कीर्ति राठौर	12
7.	कविता संग्रह : संघर्ष की कहानी, कह रहा हूँ रोज कविता	आमोद श्रीवास्तव	13
8.	जोश के साथ होश भी जरुरी	प्रशांत कुमार श्रीवास्तव	14
9.	ओलंपिक – लघु कथा	मधु वर्मा धीर	15
10.	नहीं मरना नहीं – कविता	मधु वर्मा धीर	15
11.	अपनी अपनी दृष्टि	प्रकाश रंजन	16
12.	सतर्कता जागरुकता अभियान, हिन्दी सप्ताह का आयोजन	रिपोर्ट	17
13.	मानव ''विकास के क्रम में''	एच के यादव	18
14.	नारी शक्ति	ब्रज भूषण डबराल	19
15.	वो लम्हे	सुचिता वी साल्वी	19
16.	माध्यम कहानी का, सरोवर ज्ञान का	आनंद कुमार सक्सेना	20
17.	कविता–''आतंकवाद'	शिव शंकर पटेल	21
18.	निवारक सतर्कता–सुशासन का मंत्र	पनाग भूषण मिश्रा	22
19.	कविता – हिन्दी दिवस	प्रशांत कुमार श्रीवास्तव	23
20.	नेमी कार्यालय टिप्पणियाँ	रुपेश एस सक्सेना	24
21.	अधिकारियों की उपलब्धियां–खेलकूद	रिपोर्ट	26
22.	खामोशी	सुनीता पी वाणी	27
23.	स्नेह का दीपक बनिए, माँ की ममता	संदीप भास्कर	28
24.	बच्चों की उपलब्धियाँ	रिपोर्ट	29
25.	समय का यथार्थ	चन्दन सिंह विष्ट	30
26.	इसे भुलाएं कैसे	रघुनाथ सिंह	31
27.	चित्र प्रदर्शिनी		33
28.	प्रतिभावान पाबलकर	रिपोर्ट	34
29.	अधिकारियों के बच्चों की कृतियाँ		36

सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग
'कैसी हिचक, कैसी शंका !'

रूपेश एस. सक्सेना
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

राजभाषा अर्थात ऐसी भाषा जिसमे शासन, प्रशासन के कार्य संपादित किए जाएँ। सर्वविदित है कि भारत संघ की राजभाषा हिन्दी है और उसे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। इस दर्जे को प्राप्त हुए हिन्दी को 60 वर्षों से ज्यादा का समय बीत गया है। हिन्दी भाषा ने खूब नाम कमाया और आज के समय में सम्पूर्ण विश्व में 490 मिलियन लोग हिन्दी जानते हैं जो कि मेंडेरिन चाइनीस के बाद दूसरे नंबर पर सर्वाधिक बोलेजाने वाली भाषा है। भारत संघ में स्वतन्त्रता के बाद बहुत से सरकारी तंत्र आए, स्थापित हुए, व्यवस्थाएं, सरकारें आई और गईं और सब ने राजभाषा के लिए अपनी नीतियाँ तैयार की, उनको कार्यान्वित किया और हिन्दी के उत्थान, गौरव को बनाए रखने के लिए नाना प्रकार के प्रयास किए, लोकतंत्र होने के नाते हिन्दी को जबरदस्ती थोपा भी नहीं गया जिसका उदाहरण हमें राजभाषा नियम 1976 में दिखाई देता है। जहां पर नियम संख्या चार, नियम संख्या छह, नियम संख्या सात और नियम संख्या आठ में जब जब हिन्दी भाषा में काम करने की बात आती है तब तब अंग्रेजी भाषा का भी विकल्प दे दिया जाता है अर्थात हिन्दी अथवा अंग्रेजी। सैकड़ों हिन्दी पदों की स्थापना करके सरकार ने हिन्दी के प्रति अपनी निष्ठा दर्शाई, ऑडियो विजुअल प्रसार के माध्यम से हिन्दी का खूब प्रचार किया और राजभाषा के नाम पर हर प्रकार की वित्तीय निधि प्रदान की। हिन्दी की संसदीय उप समितियों के दौरे अपने आप में सर्वोच्च साक्ष्य है कि सरकारी पक्ष की ओर से प्रयास किए गए हैं और किए जा रहे हैं।

यदि हम शीर्षक की ओर ध्यान दें, तो उपर्युक्त बातें भूमिका स्वरुप मानी जा सकती हैं जो वस्तुस्थिति दर्शाती हैं कि राजभाषा हिन्दी को पूरी तरह से कर्मचारियों को अपनाना चाहिए। किन्तु ऐसा बिलकुल भी नहीं हो रहा है। सब हिन्दी में बोलते हैं, हमारी अपनी भाषा है, हम सबका उस पर नियंत्रण है। फिर भी सरकारी कामकाज में इसका प्रयोग बहुत कम हो रहा है। आज हमें इसके मनावैज्ञानिक पहलुओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। हमें इसके कामकाज में प्रयोग करने से कैसी हिचक होती है और क्या शंका होती है ? यह मान्य है कि भारतीय सरकारी तंत्र पूरी तरह से ब्रिटिश प्रणाली पर आधारित है, पर अब तक हमने इस तंत्र का बहुत कुछ भारतीयकरण कर लिया है और यदि हम इस तर्क की बात करें कि हम ग्लोबलाइजेशन के जमाने में हैं और यदि अंग्रेजी नहीं प्रयोग करेंगे तो पिछड़ जाएँगे तो इसके विपरीत जापान, कोरिया, जर्मनी, रूस जैसे देश का उदाहरण भी हैं जो कि पूरी तरह से विकसित हैं और किसी भी तरह से वह अपनी मूल या राजकीय भाषा में ही काम करते है चाहें वह सामान्य कामकाज हो या अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान या वैज्ञानिक खोजे हो या शिक्षा का मामला हो। तो तर्क का विषय उसी स्थान पर पहुँच जाता है कि हमें इस तथ्य के मनोवैज्ञानिक पक्षों को जाँचना होगा कि हम राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को लेकर इतनी शंका में क्यो हैं ?

सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करनेवाले या उसका प्रयास करनेवालों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने की आवश्यकता है। प्रमुख रूप से उनके विचारों में हिन्दी को लेकर पूर्वाग्रहों का होना, भाषा की दुरूहता एवं अपने आप

को लक्ष्य भाषा पूरी तरह से व्यक्त न कर पाना, कामकाजी परिवेश में अपने आप को अलग न दिखाने की प्रवृत्ति आदि नाना प्रकार के तथ्य हैं जो सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग में अडचनें पैदा करते हैं ।

सर्वप्रथम बात करते हैं सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को लेकर आम कर्मचारियों के मन में बसे कई तरह के पूर्वाग्रहों और गलतफहमियों की । उदाहरण के तौर पर मैंने पाया है कि आम कर्मचारी यह सोचता है कि हिन्दी में लिखी गई टिप्पणीयों (नोटिंग्स) पर बड़े अधिकारियों का ध्यान नहीं जाएगा या उस पर ज्यादा जोर नहीं पड़ेगा, हमारी बात को दोयम दर्जे का माना जाएगा या उच्च अधिकारी को कहीं यह भास न हो जाये कि अमुक कर्मचारी को अंग्रेजी ठीक से नहीं आती इत्यादि इत्यादि..... । फाइल में नोटिंग लिखते वक्त किसी अंग्रेजी के शब्द की स्पेलिंग न आने पर कर्मचारी अनेक शब्दकोशों, संग्रहों आदि खोजने लगता है परंतु यदि हिन्दी की बात हो तो वह सीधे तौर पर वहाँ पर एक मानक समानार्थी अंग्रेजी शब्द लिख देगा, वह हिन्दी की शुध्द वर्तनी के लिए शब्द कोश का सहारा नहीं लेगा या किसी सहयोगी से नहीं पूछेगा । इस तरह के पूर्वधारणाओं को हटाने का वक्त आ गया है । हमें पूरी तरह से विश्वाश होना चाहिए कि हिन्दी एक बहुत ही प्रभावी, वैज्ञानिक एवं सरल भाषा है । सभी अधिकारी हिन्दी में किए गए कार्यों को बढ़ावा दिये जाने के लिए कटिबध्द हैं तो कर्मचारियों को हिचक कैसी! ऐसा कई बार देखा गया है कि यदि आप ने किसी विषय पर नोटिंग की तरफ यदि हिन्दी में टिप्पणी कर दी है तो उच्च अधिकारी हमेशा आगे की टिप्पणी हिन्दी में ही लिखता है और यह क्रम आगे चल निकलता है । कर्मचारियों को हिन्दी टिप्पणी करते समय गर्व का अनुभव होना चाहिए, भले सादी और सुलभ भाषा ही सही, परंतु प्रयास करना चाहिए । उच्च अधिकारीगण को चाहिए कि हिन्दी में किए गए कार्यों पर अमुक कर्मचारी के लिए उसके हिन्दी के फाइल कार्यों पर कहीं कोने में एक छोटा प्रशंसात्मक टिप्पणी लिखें जिससे उनके मनोबल में वृध्दि हो सके और इससे दूसरों को भी प्रेरणा मिले ।

एक अन्य पहलू है भाषा की दुरुहता एवं अपने आप को हिन्दी में पूरी तरह से व्यक्त न कर पाना जिसके कारण सरकारी कामकाज हिन्दी में करने पर हिचक होती है । आम तौर पर यह माना जाता है कि सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग एक पेचीदा काम है और अंग्रेजी में इसे कम शब्दों में ही किया जा सकता है । वस्तुत: इसके पीछे सच्चाई यह है कि ज्यादातर सरकारी फाइल काम पिछले कर्मचारी द्वारा किए जा रहे कार्यों को देखकर किया जाता है और अंग्रेजी की कहावत को याद रखा जाता है ' टर्न द फाइल, टर्न टु वर्क', ऐसा कई वर्षों से चला आता है । इस मानसिकता ने हर नए आने वाले कर्मचारियों को अपने स्वयं की भाषा, सोच को हिन्दी में प्रस्तुत करने से रोका और सरकारी हिन्दी शब्द प्रचलित न हो सके तो भाषा दुरूह लगने लगी । हालांकि हिन्दी शब्दकोश में कठिन सरकारी शब्दो के अलावा आसान शब्द भी हैं । अनुमोदन शब्द कठिन लगता है तो स्वीकृति लिखा जा सकता है । सरकार स्वयं भी इस बात का प्रचार कर रही है कि सरकारी काम काम में सरल हिन्दी का प्रयोग किया जाये । तो सौ बात की एक बात कि फ़ाइल का काम करनेवाले कर्मचारीगण अपने स्वयं के विचारो को सरल एवं सटीक हिन्दी भाषा में लिखें । उद्देश होना चाहिए अपने विचारो को सरल हिन्दी में व्यक्त करना एवं कामकाज में स्पष्टता और यही सरल भाषा जब आगे आनेवाले कर्मचारी प्रयोग करेगा तो हिन्दी में कामकाज को बढावा मिलेगा ।

ऊपर बताए गए कारणों में एक बहुत ही अनछुआ का पहलू भी आता है जिससे सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने में हिचक होती है, वह है 'कामकाजी परिवेश में अपने आप को अलग न दिखाने की प्रवृत्ति'। बहुत से सरकारी कर्मी इस सोच के होते हैं कि यदि वे हिन्दी में कामकाज करेंगे तो वे अन्य कर्मियों से बेहतर और अलग हटकर नजर आएंगे इससे अन्य अधिकारियों का ध्यान उन पर जाएगा और फिर उनके वरिष्ठ अधिकारी बार बार उनको ही काम देंगे । यह विचारधारा भारतीय परिप्रेक्ष में सभी सरकारी कार्यालयों में देखी जा सकती है । ऐसी सोच रखनेवालों को सोचना चाहिए कि उनके पास अतिरिक्त योग्यता है और उनकी यह सोच से बढ़कर है राजभाषा का सम्मान । यदि आप अपनी भाषा को ऊपर नहीं ले जाएगें तो कौन ले जाएगा ? यह भी ज्ञात होना चाहिए कि हमारी वार्षिक निष्पादन रिपोर्ट/ सी.आर. में उनके द्वारा हिन्दी में किए गए कार्यों का विवरण, राजभाषा में कार्य सम्पादन में उनके योगदान का विवरण भी सम्मालित है । अत: बिना किसी गलतसोच के हिन्दी का उपयोग अपने काम में लाएँ । आप सभी से अलग अपनी पहचान हिन्दी के माध्यम से बना सकते हैं और वरिष्ठ अधिकारियों का विश्वास जीत सकते है, बस आपको इस बिन्दु पर सकारात्मक सोच रखनी है ।

इस प्रकार पुन: इस लेख के शीर्षक पर ध्यान देते हैं 'सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग' – 'कैसी हिचक कैसी शंका !' और इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह हिचक बहुत हद तक व्यक्तिगत मनोविज्ञान की है, हमें हिन्दी का भरपूर ज्ञान है और हम सरकारी कामकाज वाली हिन्दी को एक अलग भाषा नहीं समझते है । यह स्पष्ट है कि जिस भाषा को आप चाहकर भी प्रयोग में नहीं लाएँगे तो वह भाषा धीरे धीरे अपरचित हो जाएगी और जिन शब्दो, वाक्यों को आप के द्वारा प्रयोग किया जाएगा वह शब्द, वाक्य, भाषा आपके उतने अच्छे मित्र बन जाएंगा और आप बिना किसी हिचक और शंका के उनका प्रयोग शासकीय कार्यों में कर सकेंगे और लोग भी धीरे धीरे आपके काम को पहचान कर अपना उत्तर हिन्दी में कर सकेंगे ।

✣✣✣✣✣

ये दुनिया हमने देखी है

शिलाए भी पिघलती है, ये दुनिया हमने देखी है
न पिघला बर्फ अग्नि से भी, दुनिया हमने देखी है
सफेदी में छुपी काली या मेंहदी में घुली लाली
पुती कालिख सफेदी में, ये दुनिया हमने देखी है
सजी महफिल में दुखी है, बुझी खामोश तन्हाई
किसी तन्हाई में पायी है चन्चल शोख अंगड़ाई
किसी कीचड़ में पनपा है, कमल जो हमने देखा है
बड़ी रंगीन है दुनिया, रंगीनी हमने देखी है।

किसी फुटपाथ पर पसरी खुशी जो हमने देखी है
मोहब्बत गाँव-गलियों की महक, ये हमने समझी है
बड़े महलों-बड़े शहरों मे, बड़े जो लोग रहते है
मोहब्बत नाम का अक्सर, दौलत से तौल जाते है
मेरा अपना तजुर्बा है कि जो बतला रहा हूँ मै
इसको गॉठ लेना तुम जो अब तक गा रहा हूँ मैं
वफाएं रह नही सकती किसी के कैदखाने में
मोहब्बत बिक नही सकती, स्वर्णों की दुकानों पर
ये वो अनमोल तोहफा है खुदा ने सबमें बाँटा है
हर धनवान, हर फकीर, हर गरीब में बॉटा है
बहुत अच्छे है ऐसे लोग, जो गुस्सा खूब करते है
मधुर मुस्कान के पीछे, कमीने हमने देखें है
बड़ी रंगीन है दुनिया, रंगीनी हमने देखी है
बडी रंगीन है दुनिया, ये दुनिया हमने देखी है

✤✤✤✤✤

तबादले

धनन्जय मौर्य
वरिष्ठ कर सहायक

माँ की कोख से निकलकर, दुनिया में प्रवेश करने का प्रथम तबादला,
रोने-हँसने, हिलने-डुलने, बोलने, चलने-फिरने,
खाने-पीने के तबादले से गुजरकर,
घर का आँगन पर कर, विद्यालय पहुँचने का तबादला,
माँ की ममता, पिता का प्यार,
अध्यापक की शिक्षा के तबादलों से गुजरकर

दुनियादारी का तबादला :
प्यार, घृणा, ईर्ष्या, क्रोध से जागृत हुयी ख्याति-कुख्याति का तबादला,
अमृत-विष पान करने का तबादला,
किशोरावस्था के अल्हड़पन में भविष्य के सपने बुनने का तबादला,
जवानी की दहलीज में कदम रखते ही हमसफर और रोजगार की चाहत का तबादला,
अब तबादले जटिल है, पदोन्नति और भी जटिल :
किसी ने तबादला लिया तो किसी ने पदोन्नति, और कोई घूमता-फिरता इन्ही तबादलों में रह गया,
किसी का विवाह में तबादला हुआ तो किसी का रोजगार में और किसी का दोनों में,
देर-सवेर सबका गृहस्थ जीवन में तबादला :
घर-परिवार की खुशी, और बॉस की दादागिरी का तबादला,
दुनियादारी के तबादले से उत्पन्न -प्यार, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष के सबसे बड़े उपयोग का तबादला
इन्हीं तबादलों से गुजरकर, जिन्दगी के अन्तिम तबादले का वक्त:
जैसा भी था, हर तबादला प्यारा ही था, अन्तिम तबादले से किनारा था,
मगर, अन्तिम तबादला भी निराला था, आना था,
फिर उसी शून्य में तबादला हुआ, जिस शून्य से सफर शुरू हुआ था,
और फिर सब-कुछ शून्य-शून्य, न कुछ रहा, न कुछ बचा,
पता भी न चला, तबादलों में जिंदगी कुछ इस तरह गुजर गयी
प्रतीत हुआ, मानो सूर्योदय से संध्याकाल का एक सफर ही तो गुजरा था।

क्या हम प्रौद्योगिकी के दास बन गए है ?

धर्मेन्द्र कुमार
निवारक अधिकारी

प्रौद्योगिकी से तात्पर्य उस प्रक्रम से है, जिसके माध्यम से किसी भी कार्य को सुनियोजित एवं सुव्यवस्थित ढंग से निष्पादित किया जा सकता है ।

मानव सम्यता के उत्थान काल से लेकर वर्तमान काल तक के इस लंबे सफर में मनुष्य को जब भी किसी भी चीज की कमी का आभास हुआ, तब-तब अविष्कार की संभावनाएँ सफलीभूत हुई । वर्तमान प्रौद्योगिकी काल तक के इस लंबे सफर में हम लोगों ने विज्ञान के भिन्न-भिन्न आयामों को समझने के लिए काफी परिश्रम किया है । यह सफर अभी बंद नहीं वरन और भी तीव्र रफ्तार से आगे की ओर जारी है ।

आज संपूर्ण विश्व प्रौद्योगिकी को अपनाने हेतु दृढ़ संकल्प है । चाहे वह समृध्द राष्ट्र अमेरिका और इंग्लंड हो या फिर एशियाई देश चीन और भारत हो। आज जीवन के हरेक क्षेत्र में प्रौद्योगिकी की आवश्यकता महसूस होने लगी है । मानो जैसे हम उसके गुलाम हो गए हो । चाहे वह क्षेत्र आर्थिक हो या शैक्षिक या फिर औद्योगिक । हर जगह आज प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जा रहा है । धीरे-धीरे प्रौद्योगिकी मानवजाति को अपने गिरफ्त में लेती जा रही है । जैसे ग्लोबल-वार्मिंग की समस्या, आज समूचे विश्व हेतु एक चिंता का विषय है । ओजोन परत का दिन-प्रतिदिन क्षय होना प्रौद्योगिकी के दुष्परिणाम की गाथा कहता है । वहीं दूसरी ओर इसके कई साकारात्मक पहलू भी हैं ।

यह प्रौद्योगिकी की ही देन है कि हम सुदूर बैठे पूरे विश्व की घटनाओं से अवगत हो जाते हैं । आज प्रौद्योगिकी के कारण ही हम सुदूर रह रहे रिश्तेदारों एवं अन्य लोगों से बातचीत कर पाने में सक्षम हो पाए हैं । प्रौद्योगिकी के कारण ही आज कंप्युटर का प्रयोग प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से किया जा रहा है । यहाँ तक कि फिल्मों में भी अब प्रौद्योगिकी अपनी भूमिका निभा रही हैं ।

आवश्यकता ही अविष्कार की जननी है । वर्तमान समय में प्रौद्योगिकी का उपयोग न केवल चिकित्सा, कृषि, प्रतिरक्षा, उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक्स, इंजीनियरिंग, ईंधन, उर्जा तथा धातु एवं तेल क्षेत्र में हो रहे हैं । अपितु अंतरिक्ष के क्षेत्र में भी इसका उपयोग किया जा रहा है । 'क्लोनिंग' वर्तमान में काफी चर्चा में है । हमारे वैज्ञानिकों ने जानवरों के क्लोनिंग में सफलता भी पायी है और मनुष्य के क्लोनिंग करने की दिशा में भी साकारात्मक परिणाम निकल रहे हैं । प्रौद्योगिकी के परिणाम स्वरुप, दूरसंचार क्षेत्र में प्रदानित सुविधा फैक्स, इंटरनेट, वेब व सेल्युलर फोन ने पूरे विश्व को एक सूत्र में बाँध रखा है । प्राचीनकाल में हमें मौसम के बारे में इतना विस्तृत ज्ञान नहीं था कि हम तूफान के केंद्र की स्थिति अथवा चक्रवात की प्रगति का पता लगा सके । परन्तु आज प्रौद्योगिकी ने इन सबों को सरल बना दिया है ।

परन्तु इनकी भी एक सीमा होनी चाहिए, अन्यथा इसका रूप विध्वंसक हो सकता है । आज हम लोगों द्वारा मानवजीवन के विध्वंश हेतु इतने हथियार बनाये जा चुके हैं कि पृथ्वी के स्वरूप को यह बदल सकती है ।

''महान वैज्ञानिक आइंसटीन'' से किसी ने पूछा था कि तीसरी विश्व युध्द कब होगी ? तब उन्होंने जवाब दिया था, तीसरे विश्व युध्द के बारे में तो मैं कुछ नहीं कह सकता, पर चौथे विश्व युध्द के बारे में बता सकता हूँ, कारण चौथे विश्व युध्द के लिए कोई इस दुनिया में जिंदा रहेगा ही नहीं ।''

अत: उचित तो यही होगा कि, हृदय और मस्तिष्क का समन्वय ही प्रौद्योगिकी को उसकी सीमा में रहने हेतु बाह्य कर सकती है । अर्थात प्रौद्योगिकी का प्रयोग मानव हित हेतु किया जाना चाहिए ।

मनुष्य अब शारीरिक क्रियाकलापों के जरिए कार्यो को संपादित करना धीरे-धीरे कम करता जा रहा है और यह स्थान धीरे-धीरे मशीनीं उपकरणों ने लेना शुरु कर दिया है । आज मनुष्य चाँद पर जाने में सक्षम हैं, जो प्रौद्योगिकी की सफलता की कहानी कहता है । आज ज़िस राष्ट्र में प्रौद्योगिकी की प्रचुरता है वह राष्ट्र उतना उन्नत और समृध्द है । वस्तुत: प्रौद्योगिकी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है । व्यवसायिक क्षेत्र की बात अगर हम करें तो यह स्पष्ट होता है कि, प्रौद्योगिकी के बल पर ही, द्वीतीय विश्व युध्द में पूरी तरह से पीड़ित राष्ट्र जापान ने लगभग 65 वर्षो में स्वयं को एक उन्नत एवं समृध्द राष्ट्रों की श्रेणी में ला खड़ा किया है । आज गरीब-से-गरीब राष्ट्र भी प्रौद्योगिकी अपनाने हेतु तत्पर है । अगर कृषिक्षेत्र की बात की जाय तो आज प्रौद्योगिकी को अपनाकर ही हम उन्नत बीजों का निर्माण कर पाने में सक्षम हो सके हैं । विकास के प्रारंभिक चरण में प्रौद्योगिकी को कुछेक महत्वपूर्ण क्षेत्रों में ही अपनाया गया, परन्तु आज हालात ऐसे हैं कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हम प्रौद्योगिकी का उपयोग करते चले जा रहे हैं ।

प्रौद्योगिकी जहाँ एक ओर सफलता और उन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है । वहीं दुसरी ओर इसके कुछ दुष्परिणाम भी हमें देखने को मिलाते है । और इस दुष्परिणाम को कम करने या समाप्त करने हेतु, एक और प्रौद्योगिकी का मार्ग प्रशस्त करती है । आज प्रौद्योगिकी के सहयोग से सौर-मंडल के रहस्यों को सुलझाने हेतु अपनी तत्परता दिखाने हेतु सक्षम हो पाया है और समय-दर-समय हम इस और प्रगति कर रहे हैं ।

यह कहना गलत न होगा की प्रौद्योगिकी ने संपूर्ण विश्व को एक नए रुप में चित्रित किया है । यह हम लोगों के जीवन शैली को बदलकर दिया है । वही दूसरी ओर यह भविष्य में उत्पन्न होनेवाले विभिन्न प्रकार के संकट का भी मार्ग प्रसस्त किया है । धीरे-धीरे यह प्रतीत हो रहा है कि हम लोगों के द्वारा ही बुने गए प्रौद्योगिकी के जाल में हम खुद अब फँसते चले जा रहे हैं । दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि हम लोग प्रौद्योगिकी की दासता स्वीकार करने लगे हैं । आज लगभग हर राष्ट्र उन्नत मिसाइल बनाने की होड़ में लगा है । अप्रत्यक्ष रुप से वह खुद ही अपने बरबादी का सामान बना रहा है ।

दास चाहे वह किसी व्यक्ति के हो या फिर प्रौद्योगिकी के, इसकी प्रवृत्ति अथवा प्रकृति चाहे जो भी हो, इसे मानवीय दृष्टिकोण से या फिर भौगोलिक दृष्टिकोण से स्वीकार नहीं किया जा सकता है । इस तथ्य से नाकारा नहीं जा सकता है कि वर्तमान विश्व विकास के जिस दौर से गुजर रहा है, शायद यह प्रौद्योगिकी के बिना संभव न होता ।

यह तो आनेवाला समय ही तय करेगा कि हम प्रौद्योगिकी के दासता से मुक्त होंगे अथवा नहीं । कुछ तथ्य ऐसे होते हैं जिसका हल मानवजाति के पास नहीं होता है । हम सिर्फ समय की धारा में बह सकते हैं परन्तु उसे रोक नहीं सकते हैं । अन्तत: यह कह सकते हैं कि प्रौद्योगिकी जहाँ एक ओर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रशंसनीय है, वहीं नैतिक और भौगोलिक दृष्टिकोण से यह प्रश्नगत है ।

अलौकिक भारत

तरुण प्रभात किरणों के उजियारे में
कदम बढ़ाना है हम सबको ।
प्रगति पथ पर चलकर
ज्ञान अलौकिक पाना है हम सबको ।
राष्ट्र प्रेम के शुभ प्रभात में
सुसंस्कृत भारत को एक धागे में
पिरोना है हम सबको ।
तन, मन, धन से नव–दिपक की
ज्योति जलाना है हम सबको
रास्ते के पत्थरों को अब ठोकरों से
हटाना है हम सबको ।
दर्द के इस गुलिस्तांन में चमन
की बहार खिलाना है हम सबको ।

धर्मेन्द्र कुमार
निवारक अधिकारी

✣✣✣✣✣

मंजिल

सब्र कर तू ऐ मुसाफिर मंजिल के वास्ते,
रास्ते तो और भी हैं तुमको चलने के वास्ते,
इस डगर मंजिल नहीं तो क्या हुआ ऐ मुसाफ़िर,
है तुझमें जलज़ला तो वक्त भी झुक जाएगा,
रौशनी की तेज़ में हर गम झुलस जाएगा,
तु किसी से कम नहीं है खुद को तू पहचान ले,
राह पर चलकर ही तो तू मंजिलों को पाएगा,
सब्र कर तू ऐ मुसाफ़िर मंजिलों के वास्ते ।

✣✣✣✣✣

जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क, न्हावा शेवा से संबन्धित कुछ तथ्य

* वर्ष 2015-16 में दिसम्बर 2015 की अवधि तक जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क, न्हावा शेवा द्वारा कुल रुपये 34024 करोड़ की राजस्व वसूली की गई।
* वर्ष 2015-16 के लिए जनवरी 2016 तक निपटान मामलों (Disposal Cases) के द्वारा रुपये 22.74 करोड़ का राजस्व वसूला गया।
* वर्ष 2015-16 में दिसम्बर 2015 की अवधि तक ईमेल/डाक/हेल्पलाईन के माध्यम से सीमाशुल्क गतिविधियों से संबंधी कुल 88 शिकायतें प्राप्त हुई थीं और सभी 88 शिकायतों का निवारण किया गया।
* वर्ष 2015-16 में दिसम्बर 2015 की अवधि तक विभिन्न 'निर्यात संवर्धन योजनाओं' के अंतर्गत छोड़ी गई ड्युटी रुपये 11,288 करोड़ है जो कि वर्ष 2014-15 की अपेक्षा रुपये 3886 करोड़ कम थी।
* जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क, न्हावा शेवा द्वारा व्यापार सुविधा हेतु अपनाए जा रहे मोड्युल इस प्रकार हैं :
  * CRCL मोड्युल, इस मोड्युल के माध्यम से ऑनलाईन सैंपल टेस्ट रिपोर्ट प्राप्त करके उसे स्वचालित तरीके से समेकित करके बिल ऑफ इंट्री को अंतिम रुप देने में मदद मिलती है।
  * EDD मोड्युल, इसके द्वारा अतिरिक्त ड्युटी अदा करने के लिए ऑनलाईन चालान निकाला जाता है।
  * सिंगल विंडो सिस्टम–इसके द्वारा व्यापारियों को माल की निकासी हेतु NOC के लिए कई एजेंसियों जैसे FSSAI, PQ, WLRO, ADC आदि .... के पास न जाकर ऑनलाईन ही सभी रीपोर्टस् को प्राप्त किया जा सकता है ताकि बिल ऑफ इंट्री को परीक्षण रिपोर्ट में बिना विलंब के आउट ऑफ चार्ज दिया जा सके।
  * SEZ मोड्युल–इसके द्वारा ICES के माध्यम से एसईज़ेड के लिए ऑनलाईन ट्रान्सशिपमेंट किया जा सकता है और पोर्ट से एसईज़ेड तक कंटेनरों के प्रचालन पर नजर रखी जा सकती है।
  * प्रोविशनल ड्राबैक ब्रांड रेट रुल 7 मोड्युल, इससे ड्राबैक कक्ष के द्वारा ब्रांड रेट निर्धारित करने से पहले ही ड्राबैक के सीमाशुल्क के भाग को अंतिम रुप से (प्रोवीसनली) स्वीकृत करता है और वह राशि निर्यातक के खाते में सीधे इलेक्ट्रोनिक रूप से जमा हो जाती है।
  * छुट्टी / अवकाश के दिनों सहित अन्य सभी कार्य दिवसों में SMTP/TP/TI संदेशों के निर्बाध ट्रंजमिशन, ई–हेल्पलाईन आदि के लिए भी जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा विभिन्न मोड्युल प्रयोग में ला रहा है ताकि कारगो की निकासी सुगम तरीके से जारी रहे।

अविस्मरणीय प्रसंग

इस साल मेरी शादी को उन्नीस साल हो गये । ईश्वर कृपा से दो पुत्रों की माँ भी हूँ। जब मेरी दूसरी प्रसूति होनेवाली थी । इसी दौरान करीब 12-13 सालों में मुझे अक्सर एक सपना आता था । मेरी शादी का प्रस्ताव आ रहा है, मेरी शादी हो रही हैं फिर अपने आप पर ध्यान जाता, और मैं सोचने लगती कि मेरी शादी तो हो गई है बच्चे भी है हरा-भरा संसार है फिर घरवाले मेरी शादी क्यों करवा रहे है ? मुझे शर्म आती थी । अगर किसी कुँवारी लड़की को यह सपना आये तो वह फूला नहीं समाती । मैं डर जाती थी और अपनी सखी के सिवा किसी से इस बारे में कभी ज़िक्र भी नहीं किया, ये सोचकर कि न जाने लोग क्या सोचेंगे।

हम जहाँ रहते हैं वही पास में 'दोस्ती एकर' नामक एक बड़ी सोसायटी है । वहाँ हमारे एक रिटायर केमिकल एक्ज़ामिनर श्री. जे. डी. चतुर्वेदी रहते हैं उनका एक दोस्ती लाफ्टर क्लब है जिनके वे प्रेज़िडेंट हैं ज्यादातर सिनियर सीटीजन का ग्रुप है वे अपने क्लब में वार्षिक सांस्कृतिक कार्य रखते हैं । जिसमें मैं काफी हद तक सहयोग देती हूँ । दो साल से मेरे पति भी नई-नई योजना बनाकर लाफ्टर क्लब पर भी ध्यान देने लगे । लाफ्टर क्लब के लाड़ले बन गये । हर त्योहार लाफ्टर क्लब में शानदार तरीके से मनाया जाता है ।

इसी तरह से होली का त्योहार मनाया जाता हैं । जनवरी के अंतिम सप्ताह में वार्षिक समारोह हुआ । 15 दिन के बाद एक मीटिंग हुई जिसमें चतुर्वेदी जी ने लाफ्टर क्लब के सदस्यों को बताया कि इस साल हमारा दूल्हा भूपेन्द्र (मेरे पति) है । अचंभित हो गई, कुछ नहीं बोली, 15-20 दिन के बाद लाफ्टर क्लब के एक सदस्य श्रीमती कोडे के टेरेस फ्लैट में सभी एकत्र हो गये । हमें भी बुलाया गया । मुझे मेरे मायके का नाम पूछा गया । मेरे और मेरे पति के हाथ में श्रीफल और मिठाई देकर हमारी सगाई कर दी गई । लाफ्टर क्लब के श्री. पंडित से शादी का मुहूर्त निकाला गया और उसे दक्षिणा भी दी गई और खाना-पीना भी हुआ क्योंकि हर सदस्य अपने घर से कुछ न कुछ बनाकर ले गया था ।

उसी पंद्रह दिन में कम्प्युटर पर कार्ड भी छप गया ।

स्थल : दोस्ती जॉगर्स पार्क
समय : सुबह साढ़े सात बजे
दिनांक : 1 मार्च 2012

जब हम जॉगर्स पार्क पहुँचे, लगभग 200 से अधिक सदस्य बन-ठनकर हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे । सभी शादी के गाने गा रहे थे। ढोल बज रहा था । मुझे और मेरे पति को दूल्हा-दूल्हन के तरह सजाया गया । हल्दी और चंदन का लेप भी लगाया गया वह दिन अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस था । बारात दूल्हन दूल्हे के घर तक गई । बारात पूरे जॉगर्स पार्क का एक चक्कर लगाकर फिल्मी गाने गाकर दूल्हन दूल्हा तक पहुंची असली मंत्रोच्चारण के बीच हमने एक दूसरे को जय माला पहनाई । जिस तरह असली शादी में वर पक्ष वधू पक्ष पर कटाक्ष करता है उसी तरह हमने भी किया । इसके बाद होली इको फ्रेंडली तरीके से खेली गई । सभी सदस्यों ने हमें ढेर सारी शुभाशीष और भेंट दी गई । उसमें एक बड़े बास्केट में फल और सब्जी, 9 रंग रस और 9 साम्रगी तथा करेला भी दिया गया शायद ये जानकर चतुर्वेदी जी कहने लगे जब आपकी शादी हुई थी तब मैं मुंबई में नहीं था । सो आज मैंने आपकी शादी को देख लिया ।

बुरा न मानो होली है ।

कीर्ति

कह रहा हूँ रोज कविता

कह रहा हूँ रोज कविता
प्रेम करुणा से भरी
इससे जुदा होना कभी भी
मेरे बस में है नही
लिख रहा हूँ रोज पन्ने
जो भी जैसा जानता
कौन सी है ये विधा
समझाना मेरे बस में है नही
अब उठी है जो कलम
तो अब न ठहरेगी कहीं
क्या सफ़र होगा ये कहना
आज भी बस में है नही
कह रहा हूँ रोज कविता
प्रेम करुणा से भरी .....

श्री आमोद श्रीवास्तव
अनुज श्री अभिषेक श्रीवास्तव
कार्यकारी सहायक

✣✣✣✣✣

संघर्ष की कहानी.....

पसीने की बूंद
माथे से उपजी
ठिठकती / चलती या बहती
नीचे की ओर
रुख और अधरों
का सरोकार करते हुए
चुमते/बिदा लेते / रु-बरु
आ पहुची .....
हृदय के पास
मन में अंगड़ाई ले
कहने लगी
मुझे कबूल कर ले
बस यहीं ठहर जाउंगी.....
मृदा को मर्दित करता
श्रमिक (किसान)
धराशाई करता है थकावट /
और पसीने की बूंद की अर्जी
लगा रहता है कर्म और मेहनत का बिस्वास
ले तपती / सूखी / बंजर / जमीं को
सींचता है पूरा दिन.....
इस पसीने की बूंद से कुछ दाने बोने और
कटाने के लिए....
आखिर अन्नदाता है
मिटाता है सभी मुल्क / जाति/ मजहब
की उठराग्नि.... बिना भेद यही श्रमिक खुद
को जला प्रकृति से संघर्ष कर जीत कर
असहाय/लाचार/मजबूर अन्नदाता लिखता
है संघर्ष की अमिट कहानी .....

✣✣✣✣✣

जोश के साथ होश भी ज़रूरी

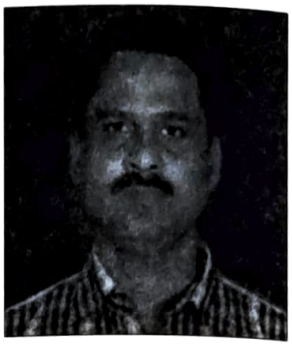

प्रशान्त कुमार श्रीवास्तव
रसायन सहायक - ग्रेड-I

इस दुनिया में कई वस्तुएँ है जिन्हे अमूल्य माना जाता है पर जरा गहरें में विचार करे तो दो ही वस्तुएं वास्तव में अमूल्य नजर आती है जो सिर्फ अमूल्य ही नही बल्कि बहुत महत्वपूर्ण भी है। ये दो वस्तुए हैं समय और अनुभव द्वारा प्राप्त किया ज्ञान समय तो इसलिए अमूल्य और महत्वपूर्ण है कि जो समय गुजर जाता है वह किसी भी मूल्य पर प्राप्त नही किया जा सकता । अनुभव से प्राप्त ज्ञान का कोई ओर-छोर और थाह नही इसलिए इसका भी अमूल्य है। जीवन का ही दूसरा नाम समय है, यानि समय और जीवन एक ही वस्तु के दो नाम है । इसलिए जीवन अमूल्य सिद्ध होता है। क्योंकि गुजरा हुआ जीवन फिर किसी भी मूल्य पर वापिस प्राप्त नही किया जा सकता जो समय अमूल्य ज्ञान को उपलब्ध करनें में व्यतीत होता है। वही समय यानी उतना जीवन ही हमारे लिये उपयोगी और उपादेय सिद्ध होता है। जितना जीवन यानी समय हम व्यर्थ गुजार देते है। उतना जीवन हमारे लिये किसी काम का नही होता यानी उतना जीवन हम जीते ही नही कर्म करना जीवन है। अकर्मठता मृत्यु है। अच्छे कर्म करना विकास करना है और कुकर्म करना विनाश करना है शुभ कर्म करना उत्थान है। अशुभ कर्म करना पतन है। हमारा समय यानी जीवन विकासशील और उत्थानकारक शुभ कर्म यानी सदाचार करते हुए व्यतीत होना चाहिए हमारा मनुष्य जीवन में आना तभी सार्थक होगा जब हम जीवन यानी समय जैसी अमूल्य वस्तु का सदुपयोग करते हुए अनुभव द्वारा सदज्ञान प्राप्त करें। आप भी जरा अपने जीवन में झाककर देखें कि क्या हम इस अमूल्य वस्तु, समय का सदुपयोग कर रहें है। या लकड़ी जला कर कोयला बनाने वाले उस मूर्ख अनपढ लकडहारे की तरह अपना जीवन नष्ट कर रहे है जिसने चन्दन के वन को काटकर कोयला बना कर बेच दिया था। तो अब यह जान समझ लेने के बाद कि अपने पूरे भावी जीवन में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण और उपयोगी सिद्ध होने वाली दो अमूल्य वस्तुए क्या है। क्या आपका यह कर्तव्य नही हो जाता कि आप इस समय जो जीवन काल जी रहे है इसका सदुपयोग करें और अनुभव द्वारा जों ज्ञान मिला है उस पर अमल करना शुरू करें। यह अनुभव आप का ही हो यह जरूरी नही बल्कि दसरो के अनुभव से भी आपको शिक्षा लेनी होगी । इन दूसरो में आपके परिवार के बूढ़े तर्जुबेकार लोग हो सकते हैं जान पहचान वाले हो सकते है आपके सहपाठी और मित्र हो सकते है।

एक मोटी बात याद रखें कि जीवन में जोश तो प्राकृतिक रूप से होता है पर इसके साथ होश भी रहे यह ध्यान रखना आपका काम है क्योंकि होश यानी सज्ञानता न रहे तो जोश का दुरूपयोग होने लगता है और इसका परिणाम पूरे जीवन भर भोगना पडता है। हमारे इस इशारे पर गौर करे और यह निर्णय करें और संपल्प करें कि आप वर्तमान समय का सदुपयोग करेंगे और अनुभवों से शिक्षा लेकर कोई गलत काम कदापि नहीं करेंगे। हम आपके संकल्प के साक्षी और सहयोगी बनना चाहते है।

✣✣✣✣✣

ओलम्पिक

शाम का वक्त 6 बजे थे। एक काम निकल आया सोच-विचार कर बुआ के साथ भतीजी चल पड़ी । शाम में कही जाना उसे पसंद नहीं था पर मरती क्या न करती ? रिक्शा लिया; रिक्शे-वाले ने वाजिब से कुछ ज्यादा माँगा वह भी कुछ डेग की दूरी के लिए ! मजबूरन ज्यादा दिए; पर साथ ही सोचा कि सुबह और शाम भी रिक्शे-भाड़े की दर पर प्रभाव डालता है और अगर गरज के साथ कुछ छींटे पड़ गए तो क्या कहते ? शहर की सड़के हैं या उँची-नीची पहाड़ियाँ ! साथ मे छोटे-छोटे जलाशय !! लौटते हुए फिर रिक्शेवाले को टटोला । दो खड़े थे; दर पूछा इस बार पहले से भी दोगुना बताया गया । थोड़ा-बहुत टाल-मटोल फिर भी दर अजीब ! बगल में खड़े अन्य रिक्शेवाले ने कहा-मैं तो इतने में कभी जाता ही नही। लड़की ताव खा गई । पहाड़ीदार जलाशयनुमा सड़क को पाँवों से नापने का असमयिक फैसला ! बुआ भी आखिर मानकर साथ चल पड़ी। कदम टटोल-टटोलकर, जमा-जमाकर कीचड़-फिसलन-जलाशयों से बच-बचाकर दोनों चलती रही। रास्ते में कई पैदलयात्री पर लड़कियाँ नही । आगे दो महिलाएँ दिखी। हिम्मत से सँभलती-सँभलती शाम के उस अंधेरे में दोनों शनैःशनैः घर के पास आती गई। दो लड़के पास से गुजरे । एक ने ऊँची आवाज में कहा - 'जानते हो यार ?' दूसरा - 'क्या ?' पहला - पहले ओलम्पिक जब शुरू हुआ था उसमें मात्र दो प्रतिशत वोमेन भाग लेती थी लेकिन अब जानते हो कितनी ? दूसरा - कितनी ? पहला 'पैंतालिस प्रतिशत !!' लड़की स्तब्ध थी ! ये सोचकर कि उस लड़के द्वारा की गई स्त्री-प्रशंसा थी या स्त्री-निंदा? सड़क को बाधा-दौड़ सी पार करती वह घर पहुँच कर भी यही सोचे जा रही थी ।

इति
मधु-वर्मा

✤✤✤✤✤

'' नहीं मरना नहीं''

सब बढ़ रहे प्रगति पथ पर बात है यह सही
बन बैठी विनाश-लीला पर हाय अपनी सहचरी
तुम सोचोगे, हम सोचेंगे कि खटपट कुछ भी ना हो तो
मत सोचो; यह तो होना है और होगा ही
हाँ! चाह भर लेंगे हम कि सुखमय हो अपना जीवन
काँटे-कीलें, झाड़-झखाड़ें ना सूझें हो जीवन मधुबन
पर मधुरस में डूबी कसमें-रस्में, हर कर्म-वचन
कब मिलता है, कब मिला है ? और न मिलेगा भी
पर इतने भर से मर बैठो तो ये कहाँ की बहादुरी ?
अरे मरना-जीना, हँसना-रोना सबको मिला, मिलता है
दाय हमारा है ये सब तो; मौत भी मिलेगी ही
पर बेसमय क्या फबता है? मरना क्या फबेगा जी?
यहाँ न रहो वहाँ जा रहो दुनिया क्यों इतना बड़ी ?
ठीक अभी से सोच लो बस, ना-ना मरना नहीं !

- मधु वर्मा

अपनी-अपनी दृष्टि

प्रकाश रंजन
कार्यकारी सहायक

एक चोर था, चोरी करने गया । रात में काफी घूमा किन्तु कहीं चोरी का अवसर नहीं मिला । लोग जाग रहे थे । मौका मिला नहीं और आप जानते हैं कि चोरी वहाँ होती है जहाँ नींद होती है । जहाँ जागरण होता है, वहाँ चोरी नहीं होती । काफी लोग जाग रहे थे । चोर चोरी नहीं कर सका । घूमता रहा और घूमते घूमते थक गया । उसे चोरी करने का मौका नही मिला । काफी थकान के बाद गाँव के बाहर गया और एक पेड़ के नीचे जाकर लेट गया । रात भर का जागा हुआ था । काफी गहरी नींद आ गई । सूरज निकल गया, फिर भी उठा नहीं ।

जब सूरज निकला तो लोग घूमने लगे । एक शराबी उधर से निकला । शराबी ने देखा कि एक आदमी पेड़ के नीचे सो रहा है । उसने घूमकर देखा और देखने के बाद बोला, ''देखो, कितना बड़ा शराबी है । कितना शराब पी है । नशे में कितना धुत है कि सूरत निकल आया किन्तु नशा अभी तक नही उतरा । पालग कहीं का । अभी सो रहा है ।'' प्रतिक्रिया व्यक्त कर चला गया । थोड़ी देर में एक दूसरा आदमी आया । वह था जुआरी । उसने देखकर कहा, ''लगता है जुए में दाँव हार गया । रात भर जुआ खेलता रहा और हार गया । थका – माँदा सो रहा है । पहले खेला ही क्यों ? और खेला तो दाँव को ठीक से क्यों नहीं खेला । बेवकूफ कहीं का अभी सो रहा है ।'' प्रतिक्रिया व्यक्त कर वह भी चला गया ।

थोड़ी देर बाद तीसरा आदमी आया । वह चोर था । उसने सोचा, ''सो रहा है, लगता है कि जैसे आज रात्रि मैं असफल रहा हूँ, यह भी मेरा कोई भाई है । असफलता के कारण निराश होकर लेट रहा है ।'' प्रतिक्रिया व्यक्त कर चला गया ।

थोड़ी देर बाद एक व्यक्ति आया । वह था योगी । उसने देखा, ''ओह ! कितनी मस्ती में सो रहा है । कितना निश्चिन्त है । कोई चिन्ता नही, लगता है कि कोई पहुँचा हुआ आदमी है ऐसे ही लेट गया । न कोई बिछौने की अपेक्षा और न किसी बात की । ऐसे ही भू-तल पर सो रहा है । लगता है बहुत ही पहुँचा हुआ व्यक्ति है । नमस्कार करना चाहिए ऐसे व्यक्ति को ।'' वह उसे नमस्कार करके चला गया । दृश्य एक था, पर दृष्टिकोण अनेक थे । एक ही दृश्य पर अनेक व्यक्ति, अनेक दृष्टिकोण से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं । वह बहुत बड़ा सत्य है ।

आपकी सोच पर निर्भर करता है, कि आप अपने जीवन को बेहतर बनाने में अपनी सहायता स्वयं कर सकते हैं । अक्सर हमलोग महसूस करते हैं कि कैसे कुछ लोग दूसरों से ज्यादा खुश है । इसका उत्तर बेहद साधारण है । जीवन के प्रति उनकी सोंच ! जो उन्हे दूसरों से अलग करती है तथा उन्हे प्रसिद्धि, खुशी और संतोष प्रदान करती है । प्रसिद्धि या खुशी पाने के लिए हमेशा नयी और अलग चीजें करें-ऐसा जरुरी नहीं है । इसके बजाय कामकाज की शैली को पहचानने, रचनात्मकता और लीक से हटकर अवधारणाओं के विकास से भी हम समाज में अलग स्थान बना सकते हैं ।

किसी भी परिस्थिती को नये परिप्रेक्ष्य में देखने की गुंजाइश हमेशा बनी रहती है । सफल होने के लिए हमें उसी निगाह की जरुरत है ।

✣✣✣✣✣

जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा, तालुका उरण, रायगड, महाराष्ट्र में

'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का आयोजन

जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा, सीमाशुल्क मुंबई अंचल-।।
के विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों पर 'सतर्कता जागरुकता सप्ताह' संबंधी पोस्टर

केंद्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा, सीमाशुल्क मुंबई अंचल-।। तथा इसके विभिन्न फील्ड इकाइयों में दिनांक 26-10-2015 से 31-10-2015 की अवधि के दौरान 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' का आयोजन किया गया । सीमाशुल्क मुंबई अंचल-।। के प्रधान मुख्य आयुक्त महोदय द्वारा दिनांक 26-10-2015 को 11.30 बजे सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सतर्कता शपथ दिलवाने के साथ ही समारोह का प्रारम्भ हुआ । जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा और फील्ड इकाइयों के बहुत से कॉमन स्थानो, महत्वपूर्ण प्रवेश द्वारों में दृश्य माध्यमों जैसे बैनर, नोटिस लगवाकर सतर्कता के लिए जागरुकता का प्रसार किया गया । इन पोस्टरों में विभिन्न प्रकार के भ्रष्टाचार उन्मूलन नारे प्रदर्शित किए गए थे जिससे आम जनता एवं कर्मचारियों के मध्य यह संदेश पहुँच सके ।

'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के आयोजन के अंतर्गत दिनांक 28-10-2015 को जे.एन.सी.एच. में एक निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें अंचल के कर्मचारियों ने भाग लिया । निबंध के विषय थे : 'निवारक सतर्कता-सुशासन का मंत्र' एवं सतर्कता में प्रौद्योगिकी का उपयोग'। इस आयोजन का उद्देश कर्मचारियों में सतर्कता संबंधी चेतना जागृत करना था और प्रतियोगिता में अधिक से अधिक भागीदारी एवं प्रोत्साहन हेतु नकद पुरस्कारों की भी घोषणा की गई थी । वर्तमान वर्ष के 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' की थीम 'निवारक सतर्कता-सुशासन का मंत्र'- को ध्यान में रखते हुये जे.एन.सी.एच. में यह निर्णय लिया गया है कि सीमाशुल्क कार्यों से संबन्धित विभिन्न प्रक्रियाओं को ऑनलाइन किया जाएगा ताकि आम जनता / व्यापारिक वर्ग का सीमाशुल्क कर्मचारियों के साथ परस्पर बातचीत या कार्यकलाप न्यूनतम हो और भ्रष्टाचार को लगाम लगाई जा सके । ऑनलाईन लाइसेंसों का पंजीकरण और पत्राचारों की कम्प्युटराइज़ रसीदों को जारी करने का प्रयास किया जाना इस दिशा की ओर अग्रसर होना है ।

✣✣✣✣✣

मानव ''विकास के क्रम में''

कर्ता, कर्म, समय और आकाश से बना यह संसार एक शिक्षा स्थल है। यह संसार जीवन का विद्यालय है जहाँ हम यह सीखने के लिए आये है कि जीवन क्या है ? इसे किस प्रकार चलाना है ? किस प्रकार जीना है जिससे कि हम भी आगे बढ़े और हमारे साथ अन्य भी आगे बढ़े । हमारा व्यवहार निन्दा से परे होना चाहिए ?

ब्राह्मण के अस्तित्व में आने को पहले की स्थिति को कालातीत कहा गया है और आध्यात्मिकता में हम इसी काल से परे की स्थिति में काम करते है। हम प्रगति को काल व आकाश के हिसाब से नहीं नापते है। यदि हम प्रगति को समयबद्ध करते है व कहते हैं कि मानव इतने दिनों से ध्यान या शुद्धिकरण कर रहा हैं तो हम असीम को सीमा में बाँधने का प्रयास कर रहे हैं। इसलिए प्रगति को स्थान, समय, सीमा की शर्तो में न बाँधे । ईश्वर ने हमे एक छोटा सा जीवन नहीं दिया है बल्कि हमने ही इसे संकुचित बना डाला हैं। प्रकृति का एक सार्वभौम सत्य वह है कि जब कोई शक्ति प्रवाहित की जाती है तो वह हमेशा चलती रहती है। उदाहरणार्थ प्रकाश सदा प्रवाहित होता रहता है और चारो ओर चक्कर काटता रहता है और अन्ततः सोचने वाले के पास ही स्वतः आ जाता है। जैसे यदि हम घृणा या हिंसात्मक विचार प्रसारित करते है तो हमारे पास अन्त में घृणा या हिंसात्मक विचार ही आते है । इसलिए कहा जाता है कि सकारात्मक विचार रखिए, मृदु बोलिए, सत्य बोलिए, प्यार से बोलिए क्योंकि ये ही विचार घूम फिरकर वापस हमारे पास आने वाले है।

इसलिए सावधान ! लालच, चापलूसी, आलस्य, कामचोरी से भरे विचारों के प्रवाह को रोकिए ! यदि हम ऐसा करते है तो हम एक प्रकार से लोगो की भलाई कर स्वयं अपनी ही भलाई करते हैं।

एक दार्शनिक सत्य यह भी है कि जब मैं अपनी सुषुप्त शक्ति को सम्भावित शक्ति को जो मेरे अन्दर ईश्वर द्वारा दिये गए उपहार के रूप में विद्यमान है, दूसरों की भलाई के लिए इस्तेमाल करता हूँ तो वह लौटकर मुझे ही प्रभावित करती है । यदि मैं किसी का जीवन बचाता हूँ तो मैं अपने ही अंश को बचाता हूँ।

हमारे पास जो कुछ भी है, वह सबके लिए है, यह जानते हुए जब मैं दूसरों में बाँटता हूँ तो जीवन का आनन्द लाख गुणा बढ़ जाता है। यह कोई नियम या विनिमय नहीं है। अच्छा कार्य करने का परिणाम अच्छा व बुरा कार्य करने का परिणाम सदैव बुरा होता है।

स्वार्थ का अर्थ आत्मकेन्द्रित होना नहीं है, स्वार्थ तो जीवन के प्रति आत्मघाती प्रकृति का नाम है । परिग्रह की आदत के कारण हम संचय करते है न कि जरूरत की पूर्ति के लिए । एक स्वार्थी मनुष्य खाना इसलिए नही खाता है कि उसे भूख लगी है बल्कि इसलिए खाता है कि उसके पास भोजन मौजूद है। स्वार्थी होना ही समस्त पापों की जड़ है।

शक्ति कार्य करने के लिए होती है और यदि कार्य नही करना हो तो शक्ति की क्या आवश्यकता ! यदि हम प्रकृति के नियमों को देखे तो यह स्पष्ट जिस चीज की हमें जरूरत है वह हमें अवश्य मिलती है। आवश्यकता है अमल करने की ।

एच.के. यादव
रसायन परीक्षक श्रेणी-2

नारी शक्ति

माँ तेरी यही कहानी–आँचल में है दूध–आँखों में पानी
सदियों से नारी को इसी रूप में जाना जाता रहा,
और पुरूष समाज नारी पर क्या–क्या जुल्म ढाता रहा,
नारी समाज खामोश सा चुपचाप जुल्म सहता रहा,
पर अब बदली है हवा बदला है समय और पुरूषों को नारी शक्ति का हुआ है ज्ञान
नारी अब भी खामोश है पर लाचार नहीं इसका उन्हे हो गया है भान
दुनियाँ के पुरूषों के मस्तिष्क में नारी सम्मान की आ गई हैं बात
इसीलिए हो गई है विश्व महिला दिवस की शुरूआत
आज के दिन विश्व की नारियों को विशेष याद किया जाता है
और समाज के उत्थान में उनके भरपूर योगदान को सराहा जाता है
नारी का पुरुष से न बैर था और न थी प्रतिद्वन्द्विता
वो तो चाहती है उसकी हरकदम वन साथ चलने की स्वतन्त्रता
अज्ञानी पुरुष न जाने क्यों नारी को वस्तु समान समझता रहा
और नारी की सहनशीलता को उसकी कमजोरी मानता रहा
पर आज उठी है नारी शक्ति की गरिमा अत्याचारी डरेगा और झुकेगा
नारी कभी शांति, सौम्यता, धन व समृद्धि की देवी लक्ष्मी बन जाती है
पर रहे याद यदि किया उसे कुछ व अपमानित तो वो रणचण्डी भी बन जाती है

✣✣✣✣✣

वो लम्हे

दिन, महिने, साल बीत गये, घर, बच्चे, ऑफिस संभालते संभालते ।।
उम्र साठ साल की होने को आयी, सुख–दुःख सहते–सहते ।।
अब ऐसे महसूस होता है के, कुछ तो रह गया है जीना ।।
लेकिन क्या रह गया और क्या छूट गया, यही मुश्किल है समझना ।।
जब याद आते है वो पल, वो लम्हे, तो दिल गुमसुमसा हो जाता है।।
अब तो साठी आ ही गई करीब, यूं ही हंसके जियेंगे जिन्दगी अब ।।

श्रीमती सुनिता वि. साळवी
ए.सी.ए.ओ.

✣✣✣✣✣

माध्यम कहानी का सरोवर ज्ञान का

आनन्द कुमार सक्सेना
रसायन परीक्षक

यह कहानी ''सुखसागर'' के पाँचवे स्कन्ध'' से ली गयी है। इस कहानी के माध्यम से जड़भरत ने राजा रहूगण को ज्ञान का बोध कराया था ।।

एक बनिया धनपात्र व बहुत सी वस्तुयें व्यापार की अपने साथ लेकर किसी दिशावर को चला व कृपणता से अपने माल की रक्षा हेतु कोई चाकर अपने साथ नहीं लिया। इसलिये 6 चोर व उनके अन्य सहायक उस बनिया के पीछे हो लिये । कुछ दूर नगर से बाहर जाकर वह बनियाँ राह भूल कर एक ऐसे वन में पहुँचा जहाँ बहुत दूर दूर तक कोई बस्ती नहीं थी व वन में बाघ, भालू, कटीले वृक्ष व नदी नाले होने से उसका राह चलना कठिन हो गया व वन में चलते-चलते उसको रात हो गयी तभी वही 6 चोर व उनके सहायक इस बनियाँ का सारा माल लूटने लगे, वह जिस वस्तु को बचाता वही वस्तु को चोर लोग लूट लेते । सब कुछ लुट जाने के बाद वह बनियाँ उस वन में टिकने का स्थान ढूढंने लगा किन्तु उसको कोई जगह न मिलने पर व जंगली जानवरों की बोली से भयभीत होकर वह भागता हुआ एक सूखे कुएं में गिर पड़ा । उस कुएं पर एक बरगद का वृक्ष होकर उसकी डाली कुएं में लटक रही थी । जब वह बनिया आधे कुएं में पहुँचा तब वह डाली उसके हाथ लगी और वह उसे पकड कर लटक गया । उस कुएं में एक साँप नीचे बैठा था । अँधियारी रात में बिजली चमकने से उसने देखा कि कुँए में एक साँप फन फैलाये बैठा है व जिस डाली को वह पकडे हुए था उस डाली को दो चुहे श्वेत व श्याम वर्ण के काटते थे। तब बनियाँ ने विचारा कि यदि मैं कुएं में कूद पड़ू तो साँप के काटने से मर जाऊँगा यदि नहीं कूदता हूँ तो डाली कट जाने से गिर कर साँप के मुँह में पड़ूगा व इसी सोच विचार में वह बनिया पड़ा रहा । उसी बरगद के वृक्ष में एक शहद का छत्ता लगा था, डाली हिलने से एक-एक बूंद उस शहद की बनिये के मुँह में गिरती थी । ऐसी विपत्ति में भी वह बनियाँ शहद खाकर बहुत प्रसन्न होता था। इस तरह बनिये की आयूर्ध्दा उस कुएँ में लटकते हुये बीत गयी व उसको निकालने वाला कोई नहीं पहुँचा । जब एक दिन उन दोनों चुहों ने उपर से डाली काट दी तब वह बनियाँ कुएं में गिर कर साँप काटने से मर गया । इतनी कथा सुनकर राजा रहूगण ने जड़भरत से कहा महाराज बड़े आश्चर्य की बात है कि वह बनियाँ एक बूँद शहद की खाकर प्रसन्न रहा पर डाली पकड़ कर ऊपर क्यों नहीं आया । यह सुन कर जड़भर बोले की इसी तरह तुम्हारी व संसारी मनुष्यो की दशा है । इस जीव को बनियाँ समझो व काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद व मत्सरता यही 6 चोर मनुष्यों के साथ रहते हैं व परिवार वाले इन 6 चोर के सहायक है। व जीव को इसीलिए बनिया कहा गया है कि उसने धर्म व ज्ञान बढ़ाने के वास्तू साधू महात्मा का सत्संग व हरिभजन करने के बजाय संसारी मायाजाल में फँस गया जो कुछ उसके पूर्व जन्म का धर्म था उसे उन 6 चोरो व परिवार वालों ने चुरा लिया । जैसे वह बनिया अपने टिकने का स्थान ढूढते समय व्याघ्र आदि के डर से भागता था वैसे ही संसारी सुख चाहने वाले दु:ख भोगते है। जैसे मनुष्य महादुख: में भी मरने का कुछ डर न रख कर, दिन रात कमाने की चिन्ता किया करता है, उसी तरह वह बनियाँ कुएं में साँप देखने पर भी मरने का भय नहीं रखता, व मनुष्य के वास्ते संसार में व परिवार में रहना ही अँधियारा कुआँ समझो । जैसे कर्म पिछले जन्म मे किये हैं उसे बरगद की वृक्ष की डाली समझना चाहिये । जिसे पकड़ कर वह जीता है । दो चुहे श्वेत व श्याम रंग के जो बरगद की डाली काटते है वह दिन व रात है जिसके बीतने से आयु घटती जाती है। जो साँप कुए में बैठ था उसे काल मानो व जिस तरह एक बूँद शहद की खाकर वह बनियाँ प्रसन्न होता था उसी तरह अज्ञान मनुष्य बुढ़ापा आने व नाना प्रकार के कष्ट सहने पर भी अपने परिवार में बैठ कर मग्न होता है। यह जगत वही वन है जिसमें आकर मनुष्य कई तरह के कष्ट सहता है। इसिलिए जो मनुष्य वेद व शास्त्र के अनुसार चलता है व भक्ती रूपी डाल का सहारा लेकर उस कुएं से बाहर आता है वही मनोरथ पा सकता है। बिना सत्संग किये मोह रूपी वन से बाहर निकलना बहुत कठिन है।

यह ज्ञान सुन कर राजा रहूगण संसारी सुखों का त्याग करके व हरिभजन एवं सत्संग करके मुक्त हुआ । जड़भरत ने अपना शरीर योगाभ्यास के साथ त्याग कर परमधाम चले गये । जड़भरत के सुमत नाम के बेटे ने राजगद्दी पर बैठ कर जैन धर्म का मत संसार में फैलाया ।

आतंकवाद

शांतिप्रिय लोगों में भय आतंक फैलाना
अशांति, विनाश और अराजकता उपजाना
हिंसा के साथ लोगों का रक्त बहाना
अपहरण बम विस्फोट तो कहीं आग लगाना
किसी संगठन की उद्देश्य पूर्ति का ये कैसा उन्माद
मानवता को कुचलना यही है आतंकवाद ।

आतंकवादियों का होता न कोई धर्म
करते है कुछ भी चाहें हो अमानवीय कर्म
प्रयोग करते है आर.डी.एक्स और मानव बम जैसे तीर
संसद में हमला तो, कभी जलता है मस्जिद मंदिर
कभी ट्रेन में बम–विस्फोट तो कभी जलता है कश्मीर
बिखरता है परिवार, आँखो से बहता है नीर
कारण–सामरिक, आर्थिक या हो राजनीतिक विवाद
प्रश्न अब भी वही है कैसे दूर हो आतंकवाद ?

सुरक्षा तंत्र मजबूत, खुफिया तंत्र का हो विस्तार
जन–जागरण और देशप्रेम की भावना का हो प्रसार
आतंकियों को छिपने को न मिले कहीं भी शरण
आतंकविरोधी नियमों का हो कठोरीकरण
गुंजेगा जब गली–गली आतंकविरोधी नाद
होगी शांति, समूल मिटेगा आतंकवाद ।

शिवशंकर पटेल
रसायन सहायक

निवारक सतर्कता - सुशासन का मंत्र

Preventive Vigilance का शाब्दिक अभिप्राय निवारक सतर्कता है। निवारक सतर्कता को good governance अर्थात् सुशासन के साधन के रूप मे कैसे उपयोग मे ला सकते है, दिये हुए बिन्दु से यही प्रतीत होता है। इससे पहले यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि सुशासन क्या है। सुशासन का अभिप्राय वैसे तो अच्छे शासन से होता है। किन्तु अच्छे शासन मे शासन के अधिकारीयो का व्यवहार और अनुशासन के साथ-साथ साफ-सुथरी छावे और ईमानदारी भी सम्मिलित है।

निवारक सतर्कता में प्रथम दृष्टया किसी भी अपराध का गलत कार्य को उसके घटित होने से पहले ही रोकथाम आवश्यक हो जाता है। किसी भी अपराध को होने से पहले उसे रोकने के लिए सबसे पहले यह सीखना चाहिए कि इससे पहले क्या परिपाटी रही है उस कार्य को करने की । यदि हम यह समझ जाये कि इससे पहले यह अपराध इन-इन परिस्थितियो मे और इन-इन स्थानो पर कुछ विशिष्ट व्यक्तियो की मिलीभगत से हुआ है तो यदि वही परिस्थितियाँ पुन: उत्पन्न होती है तो उस अपराध को पहले ही संज्ञान लेकर निवारक सतर्कता बरत कर रोका जा सकता है। इसके अतिरिक्त यदि वह अपराध पूर्ण नही हुआ होता है तो उसके पूर्ण होने से पहले भी रोका जा सकता है।

किसी भी अपराधी को दिया हुआ दण्ड भी एक निवारक का कार्य करता है अर्थात किसी गलत कार्य के लिए किसी अधिकारी या कर्मचारी को यदि दण्डित किया जाता है, तो यह बाकी अधिकारियों अथवा कर्मचारियों के लिए एक सीख होती है और साथ-साथ एक डर भी होता है कि यदि वो ऐसा कार्य करेगे तो उन्हे दण्डित किया जायेगा । साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि जो व्यक्ति इस क्षेत्र में अच्छा कार्य करे, उन्हे पुरस्कृत भी किया जाये । कोई अधिकारी या कर्मचारी यदि अपने कार्य मे दक्ष या निपुण है और अपना कार्य अत्यन्त ईमानदारी से करता है तो उसे पुरस्कृत किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। जिससे उसे और साथ-साथ अन्य सहयोगियो को भी प्रोत्साहन मिल सके और जिससे सभी इस कार्य में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले सके ।

सर्तकता के लिए प्रौद्योगिकी का भी उपयोग किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। बदलती हुई दुनिया जो कि बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है इसमें पुराने तरीके अपराधो को रोकने के अब कारगर सिद्ध नही हो सकते । अत: बदले परिप्रेक्ष्य मे प्राद्यौगिकी का प्रयोग अत्यन्त ही आवश्यक है । उदाहरण के लिए यदि कार्य करने वाले स्थानो पर वृन्द परिपथ दृण्य कैमरे लगाये जाये और उस पर समय-समय पर उचित ध्यान दिया जाये की वह कार्यरत है तो नब्बे प्रतिशत अपराधों के ऐसे ही खत्म किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त नवीन मोबाईलों का प्रयोग अपराध रोकथाम में अत्यन्त ही कारगर सिद्ध होता है। यदि कार्य को फाइलों पर करने के बजाय आनलाइन कम्प्युटर मे किया जाय तो फाइलो के रखरखाव से मुक्ति मिलेगी और अधिक दिन तक उसे सुरक्षित विना परिवर्तित किये जा सकता है। आनलाइन काम करने पर धन,बल दोनो का हास कम होगा और निवारण सतर्कता भी प्राप्त होगी । इस प्रकार हम यह कर सकते है कि सतर्कता में प्रौद्योगिकी का प्रयास करके इसमे आमूल चल परिवर्तन लाया जा सकता है।

सुशासन मे यह भी अत्यन्त आवश्यक है कि कार्य ठीक प्रकार से और सही समय पर पूर्ण हो तथा सभी अधिकारी व कर्मचारी अपने कार्य को पूरी ईमानदारी और जिम्मेदारी से निभाये और गलत कार्यो को उनके घटित होने से पहले ही रोके । इन सभी के लिए निवारक सर्तकता एक अच्छे साधन के रूप में उपयोग हो सकता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि निवारक सर्तकता सुशासन के मंत्र के रूप में प्रयुक्त हो सकती है।

पनाग भूषण मिश्रा

इंस्पेक्टर (प्रिवेन्शन ऑफिसर)

हिंदी दिवस

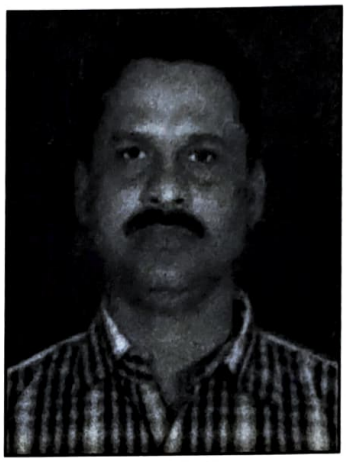

प्रशांत कुमार
सहायक रसायन परीक्षक

दु:ख में किया भगवान को याद,
काम हो गया तो 'थैंक्स गाड' ।
हिन्दी पखवाड़े तक अभिवादन से काम लिया,
खत्म होते ही 'बाय-बाय' का आँचल थाम लिया ।
'ग्रैंड फादर' बाबा से ज्यादा सुहाने लगे,
जीवित पिताजी अब 'डैड' कहलाने लगे ।
प्रवेश बंद 'एडमिसन' शुरू,
अंग्रेजी माध्यम बन बैठा शिक्षा निकेतन का गुरु ।
धैर्य जवाब देता है 'पेशेंस' देखकर,
उपस्थिति घबराती है,
शिक्षित वर्ग की 'प्रजेंस' देखकर ।
सलाह माँगा 'ऐडवाइस' मिली,
हिन्दी चुना, अंग्रेजी की 'च्वाइस' मिली,
जो पीड़ा झेली भारत माता ने,
क्या वो बिम्ब उभरता है 'मदर इंडिया' के नाम में ।
क्या प्राचीन सभ्यता की खुश्बू नहीं आती गुरुग्राम में ।
किसी भाषा का विरोध नहीं चाहिए,
भावनाओं में प्रतिशोध नहीं चाहिए ।
निरंतर हिन्दी समृध्दि की बात करें,
हर सुंदर शब्दों को आत्मसात करें ।
बेहतर हो कि हम व्यवहारिकता अपनायें,
'हिन्दी दिवस' को सालाना रिवाज ना बनायें ।

नेमी कार्यालय टिप्पणियाँ

(1) देखना, जानकारी और सामान्य

1. आदेश के लिए प्रस्तुत है ।
   Submitted for orders.
2. सूचना (जानकारी) के लिए प्रस्तुत है ।
   Submitted for information
3. कृपया पावती भेजिए ।
   Kindly Acknowledge.
4. पत्र मिलने की सूचना भेज दी है (पावती भेज दी गई है) ।
   The receipt of the letter has been acknowledged.
5. जरुरी कारवाई कर दी गई है ।
   Needful has been done.
6. उत्तर का मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है ।
   Draft reply is put up for approval.
7. .... के निदेशानुसार मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है ।
   Draft as directed by .... is submitted for approval.
8. ... को समाप्त होनेवाले सप्ताह का बकाया साप्ताहिक विवरण अवलोकन के लिए प्रस्तुत है ।
   Weekly arrears statement for the week ending..... is submitted for perusal.
9. नई आवती सूचना के लिए देख लें ।
   The F. R. may please be seen for information.
10. मसौदा तदनुसार संशोधित कर दिया है ।
    Draft has been amended accordingly.
11. पिछले पृष्ठ पर दिए गए निदेश के अनुसार मामला फिर से प्रस्तुत किया जाता है ।
    The case is resubmitted as directed on prepage.
12. आगे कोई कारवाई अपेक्षित नहीं है ।
    No further action is called for.
13. कृपया इसे अविलम्बनीय समझें ।
    This may please be treated as urgent.
14. इसका हमसे सम्बन्ध नहीं है ।
    We are not concerned with this.
15. अपेक्षित कागज़-पत्र नीचे रखे हैं ।
    The required papers are placed below.
16. अपेक्षित मिसिलें (फाइलें) नीचे रखी हैं ।
    Requisite files are placed below.
17. देख लिया इसे ..... को आवश्यक कारवाई के लिए भेजा जा रहा है ।
    Seen and passed on to..... for necessary action.

(2) सुझाव देना :

18. मामला अभी वित्त मंत्रालय के विचाराधीन है ।
    The matter is still under consideration of ministry of Finance.
19. हमें कोई टिप्पणी नहीं करनी है ।
    We have no remarks to offer.
20. वांछित सूचना ..... से मंगाई गई है, वहाँ से प्राप्त होते ही भेज दी जाएगी ।
    The required information has been called for from ...and will be furnished as soon as the same is received.
21. ये कागज़ सूचना तथा संदर्शन के लिए ..... को दिखा दिए जाएं ।
    These papers may be shown to ..... for information and guidance.
22. प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाये ।
    Administrative approval may be obtained.
23. औपचारिक अनुमोदन आवश्यक है । उसे प्राप्त कर लिया जाए ।
    Formal approval is necessary. The same may be obtained.
24. ऊपर बताई गई परिस्थितियों में हम सुझाव मान लें ।
    In view of the circumstances stated above, we may agree to the suggestion.
25. इसकी मंजुरी देने के लिए हम सक्षम हैं, देखिए.....
    We are competent to sanction this vide .....

(3) संक्षिप्त आदेश :

26. जाँच पूरी की जाए और रिपोर्ट जल्दी प्रस्तुत की जाए ।
    Enquiry may be completed and its report submitted at an early date.

(4) वित्तीय और प्रशासनिक :

27. अन्तिम बिल निर्धारित प्रपत्र (फार्म) पर नहीं है ।
    The final bill is not on the prescribed form.
28. बिल निम्नलिखित आपत्तियों के साथ वापस किया जाता है ।
    The bill is returned herewith with the following objections.
29. इस अन्तिम बिल पर लेखा शीर्ष नहीं लिखा गया है ।
    Head of account has not been given on the final bill.
30. अनुमति देने के लिए हम सक्षम हैं ।
    We are competent to grant permission.
31. मुख्यालय से कृपया दुबारा विचार करने के लिए अनुरोध किया जाए ।
    Head Quarter may be requested kindly to reconsider.
32. यह प्रमाणित किया जाता है कि बिल की रकम व्यक्तियों को चुकाई गई है ।
    Certified that amount of the bill has be disbursed to the proper persons.

उपब्धियां

1) जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क, न्हावा शेवा में कर सहायक के पद पर कार्यरत श्री. इंद्रजीत दिलीप मोहिते आल एयर राइफल शूटिंग इवैंट में अखिल भारतीय स्तर के शॉर्ट शूटर हैं। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय कस्टम दिवस के अवसर पर वर्ष के सर्वश्रेष्ठ स्पोर्ट्सपर्सन का अवार्ड श्री मोहिते को प्रदान किया गया। उनकी प्रमुख उपब्धियां है।

1. वर्ष 2015 के महाराष्ट्र चैंपियन–महाराष्ट्र शूटिंग चैंपियनशिप में गोल्ड मेडेल।
2. स्पोर्टक्राफ्ट : राष्ट्रीय चैंपियनशिप प्रतिस्पर्धा 2015–कांस्य पदक।
3. 59 वीं राष्ट्रीय ओपेन कॉम्पटिशन 2015 में उन्होने भाग लिया।
4. वर्ष 2015 की भारतीय टीम के सेलेक्शन ट्राइल में चौथे स्थान।
5. केरल में सम्पन्न 35 राष्ट्रीय खेलों में भाग लिया।
6. वर्ष 2016 हेतु भारतीय टीम के सेलेक्शन ट्राइल हेतु चयनित।

श्री. इंद्रजीत दिलीप मोहिते

2) इस सीमाशुल्क भवन में कर सहायक के पद में कार्यरत ऑल्डन डिसूज़ा राष्ट्रीय स्तर के हॉकी के खिलाड़ी हैं, उनकी प्रमुख उपलब्धियां है;

1. वर्ष 2008 में सिंगापुर में आयोजित जूनियर हॉकी टूर्नामेंट में उन्होने भारत प्रतिनिधित्व किया
2. जर्मन बुन्डेस्लीग लीग 2012 एवं 2014 में भाग लिया।
3. वर्ष 2006, 2007, 2008, 2009, 2009, 2010, 2011 एवं 2012 में सीनियर राष्ट्रीय हॉकी चैंपियनशिप में मुंबई का प्रतिनिधित्व किया।
4. वर्ष 2009 में गुवाहाटी में आयोजित राष्ट्रीय खेलों में एवं वर्ष 2012 में रांची में आयोजित राष्ट्रीय खेलों में महाराष्ट्र का प्रतिनिधित्व किया।

ऑल्डन डिसूज़ा

3) सी.आर.एस.सी.बी. केंद्रिय राजस्व खेलकूद और सांस्कृतिक बोर्ड के वर्ष 2015-16 कल्चरल मीट में जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन के श्री. जितेंद्र कवटे, कर सहायक ने श्री. संजय क्षीरसागर, अधीक्षक के साथ मिलकर सब–ज़ोनल और ज़ोनल स्तर पर लाइट इन्स्ट्रुमेंटल श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

श्री. जितेंद्र कवटे (दायें) एवं उनके साथ
श्री. क्षीरसागर लाइट इन्स्ट्रुमेंट श्रेणी में प्रदर्शन करते हुए।

4) इसी सीमाशुल्क भवन की श्रीमती कीर्ति राठौर, सीमाशुल्क अधीक्षक ने सब ज़ोनल और वेस्ट ज़ोन स्तर पर एकल नृत्य प्रतिस्पर्धा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

नृत्य भंगिमाओं के साथ
श्रीमती कीर्ति राठौर

खामोशी

श्रीमती सुनिता प्रकाश वाणी
सहायक रसायन परीक्षक

दुख इस बात का नही है
के वो हमसे आगे निकल गए और
बैठे बैठे ही दौड़ जी गये ।
बातों-बातों में हम उलझते रहे
और मजाक करते-करते वो आगे निकल गये।
हम पढ़ते रह जानते रहे समझते रहे
वो बिना पढ़े ही ना जाने कैसे हसते-हसते आगे निकल गये
जवाब तो हर एक सवाल का था हमारे पास
मगर फिर भी हम चुप रहे.. बेजुबान की तरह ।
यह उनकी काबिलियत नहीं थीं
बल्कि हमारी खामोशी की सीढ़ियाँ थी
जो आसानी से वो चढ गए।
दुख इस बात का नही है
के वो हमसे आगे निकल गए
दु:ख तो इस बात का है के
सबकुछ समझते हुए भी हम खामोश रहे और
बिना काबिलियत वो आगे बढ़ते रहे... बढ़ते रहे

✤✤✤✤✤

ये नगर का नर

बन संवेदना शून्य,
धर्म न पून्य ।
सिमटी सी लाइफ,
केवल बच्चा और वाइफ ।।
रहा न घाट न घर,
ये नगर का नर ।
सँवर, सुबह निकलना,
फिर भीड़ में खोना ।।
नित शाम झगड़ता,
अंध रात मुर्दा बन पड़ता ।।
यही गोल डगर....
ये नगर का नर ।
किराये का मकान,
थोड़ा खान-पान ।
रिश्तों से दूर,
पत्नी से मजबूर ।।
जिये तन्हा बिफर...
ये नगर का नर ।।

श्री रघुनाथ सिंह
मूल्य निरूपक

स्नेह के दीपक बनिए

तमसोमा ज्योतिर्गय – अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाइए यह प्रभु से प्रार्थना है। अज्ञान के अन्धार में स्नेह का दीपक जलाइए प्रकाश का साम्राज्य हो जायेगा । प्रकाश हमारी आकांक्षा और आनन्दानुभूति का प्रतीक है । इसी प्रतीक को व्यक्त करने के लिए दीपावली आती है।

वैरागी का यह कथन उल्लेखनीय है, जिसने माँ का दूध पिया है वे ही आगे आते है, वे सूरज बेशक न बन सके लेकिन मशाल बन जाते है। महत्वपूर्ण यह नही है कि हमारे स्नेह का दीपक मिट्टी का है अथवा स्वर्ण निर्मित है, महत्वपूर्ण है उसमें भरा हुआ स्नेह रूपी घृत या तेल जो अन्धकार को मिटाने का हेतु बनता है । हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा का कथन है, ''अन्धकार के निवारण पर ध्यान दीजिए, वहीं साध्य है, साधन कुछ भी हो सकता है – ''दीपक मिट्टी का हो या सोने का मूल्य उसकी लौ का है। अन्धेरे का कोई भी तीर उसकी लौ को निगल नहीं सकता है।

असफलता के क्षण वस्तुत: निराशा और अन्धकार के क्षण होते है यदि हम इस अन्धकार को ही सर्वस्व मान लेते है तो हमारी असफलता हमारी चिरसांगिनी बन जाती है । यदि हम अन्धकार को भी प्रकाश का स्रोत मान लेते है, तो अन्धकार के मध्य ही सफलता की ओर ले जाने वाला मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

हमारा भविष्य अनिश्चित अवश्य है परंतु सर्वदा अन्धकारमय नही है। जीवनज्योति के नाम पर हम आशा की डोरी के सहारे अपने कर्तव्य पथ पर चल पड़े, अन्धेरा कटता जाएगा । दीपक मिलते जाएंगे, जीवन पथ प्रशस्त होता जाएगा ।

प्रकाश की सार्थकता मार्गदर्शन मे है, भूले भटकों, भयभीतों का एकमात्र सहारा प्रकाश है वह चाहे टूटे हुए दीपक का प्रकाश हों अथवा महासागर की उत्ताल तरंगो से जूझते हुए जल पोत को सावधान करने वाले प्रकाश स्तम्भ का प्रकाश हो, भूले भटको को, अज्ञानियो का मार्गदर्शन करना ज्ञान के प्रतीक प्रकाश की पहचान है।

✣✣✣✣✣

माँ की ममता

माँ ममता की छाया, माँ जगत की माया ।
माँ भगवान का रुप, माँ सर्दी की धूप ।
माँ गंगा की धारा, माँ ही चाँद–सितारा ।
माँ सभी के लिए खास, माँ हर गम में साथ ।
माँ सा देव न दूजा, माँ की करें हम पूजा ।

संदिप भास्कर (12 वर्ष)
सुपुत्र – श्री. रघुनाथ सिंह (मूल्य निरुपक)

बच्चों की उपलब्धियां

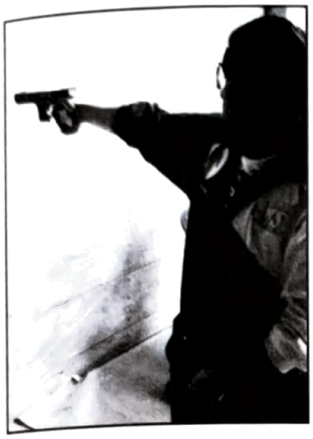

समर्था एन. सावणेकर

यह हर्ष का विषय है कि जवाहरलाल नेहरु सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा में कार्यरत श्रीमती मेघना नंदकुमार सावणेकर, निवारक अधिकारी की सुपुत्री समर्था एन. सावणेकर ने वेस्ट जोन शूटिंग कॉम्पटीशन में 25 मीटर .22 स्पोर्ट्स पिस्टल (फायर आर्म) श्रेणी में गोल्ड मेडेल जीता और नई दिल्ली में होनेवाले नेशनल स्पोर्ट शूटिंग प्रतिस्पर्धा में जूनियर एवं सीनियर (दोनों वर्गो) में क्वालीफ़ाई किया। उन्होने 10 मीटर एयर पिस्टल (जूनियर) स्पर्धा के लिए भी राष्ट्रीय स्पोर्ट शूटिंग प्रतिस्पर्धा के लिए क्वालीफ़ाई किया। राष्ट्रीय खेलों में शूटिंग चैम्पियनशिप प्रतिस्पर्धा में उन्होने महाराष्ट्र का प्रतिनिधित्व भी किया।

ओम एन. सावणेकर

श्रीमती मेघना नंद कुमार सावणेकर, निवारक अधिकारी के पुत्र सुपुत्र ओम एन सोवणेकर, आयु 15 वर्ष एक प्रतिभावन तीरंदाज हैं और छोटी उम्र से ही अब तक जिले स्तर, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर तक की प्रतिस्पर्धाओं में अब तक कुल 51 मेडल प्राप्त कर चुके हैं। वह रिकर्व्ड बो पर प्रैक्टिस करते हुए 59 राष्ट्रीय स्कूल खेलों में और 6 मिनी राष्ट्रीय तीरंदाजी प्रतिस्पर्धा, आंध्रा प्रदेश में स्वर्ण पदक जीता। राष्ट्रीय स्तर प्रतिस्पर्धा में ओम का तीसरा स्थान था और उनका दो बार राष्ट्रीय तीरंदाजी टुर्नामेंट में चयन हुआ।

अभिषेक एस. क्षीरसागर

इस कार्यालय के श्री संजय क्षीरसागर, सीमाशुल्क अधीक्षक के सुपुत्र अभिषेक एस क्षीरसागर जो कि केंद्रिय विद्यालय, आई.आई.टी. पवई के 11 वीं के छात्र हैं, उन्होने आगरा में आयोजित राष्ट्रीय केंद्रिय विध्यालय स्कूल मीट में अंडर 19 में हर्डल के 110 मीटर स्पर्धा में मुंबई का नेतृत्व किया और गोल्ड मेडेल के साथ 10 हजार रुपये की इनाम की राशि जीती। इसके अतिरिक्त उन्होने स्कूल गेम्स फ़ैडरेशन ऑफ इंडिया में स्कूल का प्रतिनिधित्व भी किया।

समय का यथार्थ

एक नेताजी को,
एक नवनिर्मित पुल के
उद्घाटन के लिए बुलाया गया,
(नेताजी राजनीति में दीर्घ कालिक थे,
कई मंत्री-पद 'चख' चुके थे,
अत: विशाल काया के मालिक थे) ।
उद्घाटन-स्थल पर,
पुल के एक हिस्से में,
मंच था, चमचे थे,
इंजिनियर था, ठेकेदार था,
दूसरे हिस्से में,
हमेशा की तरह
तमाशबीन जनता का अम्बार था ।
नेताजी दो घंटे बिलम्ब से पहुँचे,
खींसे निपोरकर, खेद का इजहार किया,
पास खड़े चमचों
और दूर खड़ी जनता ने
नेताजी का जय - जयकार किया,
परन्तु आगे जो हुआ,
उससे सब उपस्थितों के छक्के छूट गये,
नेताजी जैसे ही उद्घाटन के लिए बढ़े ।
उनके भार से पुल के बीच के खम्भे टूट गये
इस तरफ का हिस्सा खड़ा रहा ।
दूसरा हिस्सा जनता समेत नदीं में समा गया
अगले दिन अखबारों में सुर्खियाँ थी -
''नेताजी बाल-बाल बच गये, कृपालु रहा ईश्वर''
नहीं थी तो मरनेवाली जनता की कोई खबर
मित्रों ! यह हास्य - कविता नहीं है,
इसमें व्यंग्य भी नहीं है,
यह तो हमारे समय का यथार्थ है,
इसमें एक नेताजी हैं,
जो सदा 'चरते' - विचरते हैं,
इंजीनियर और ठेकेदार हैं,
जो चमत्कारी निर्माण करते हैं ।
इसमें एक पुल भी है,
जो उद्घाटन के वक्त ही टूट जाता है,
और है जनता, सब देख-सुनकर भी
जिसका भोलापन न धैर्य न छूट पाता है ।
इसी के चलते वह सब सहन करते आई है ।
कभी मर-मर के जिन्दा रही,
तो कभी जिन्दा मरते आई है,
कभी जिन्दा मरते आई है ।

चन्दन सिंह विष्ट

इसे भुलाएँ कैसे ?

यह कविता उस ममतामयी माँ को समर्पित है जो अपने फूल से छोटे बच्चे को पाकर निहाल हो उठती है, कभी वह उसे स्कूल छोडने जाती है, कभी खेल क्रीड़ा से धूल से सने पैरों को धोती है, कभी लुका-छिपा का खेल खेलती है अर्थात वही उसके लिए सम्पूर्ण दुनिया है परन्तु काल के क्रूर हाथो ने माँ से उसका वही खिलौना छीन लिया, उस माँ की मनोदशा का वर्णन करती यह कविता जिसमें माँ अपने उस लाडले को भूलने का प्रयास कर रही है।

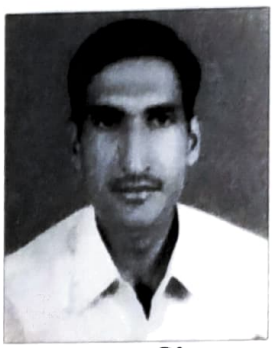

रघुनाथ सिंह,
मूल्य निरुपक

वो नगरी एक आबाद हुई थी,
मानो बारिश ; सदियों बाद हुई थी ।
ममता की दौलत का कोई मोल नहीं है,
माँ के लिए पुत्र से परे कुछ अनमोल नहीं है ।
पर आज, मन को मनाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।1।।

काल के लम्बे हाथों ने,
मारा था उसकी लातों ने ।
करके याद ; तेरी बातों को,
रोती अँधेरी रातों को ।
बिन बाती, दिल का चिराग जलाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।2।।

चुलबुल बगिया-सी वो हस्ती,
मादकता से भरी हुई-सी मस्ती ।
सिमटी हुई थी उसमें दुनियाँ,
फूलों के संग महकी दुनियाँ ।
गुम सारी, वो अब पाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।3।।

नित-प्रति यह कहकर जाना,
ये अश्क लबों पर न सहकर आना ।
आँचल औढ़ छुप जाना,
खटिया औट लुक जाना ।
बीता पल, वो अब दुहराऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।4।।

खाता चिड़िया चोंच निवाला,
बैठा आँगन-पौंछ सुखहाला ।
जगमग जुगनू देख मन भावन,
ला देता था जेठ में सावन ।
आज, नयनों को समझाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।5।।

क्रीड़ांगन में देख निहारुँ,
धूली भरे जब पाँव पखारुँ ।
मचल पड़े जब ठण्डे जल से,
रोने-का-सा नाटक छल से ।
मन का, सुख अवसान छुपाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।6।।

कर-कमलों से पकड़ी स्याही चलती,
कोमल-कोमल नीले अक्षर बुनती ।
लाल-लकीर सी अँगुली देखूँ,
अपनी मन-नगरी को पगली देखूँ ।
जख्म, उस स्वर्गसुख का दिखाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।7।।

'हाबू' के डर की आँखें लुक-छिप,
सोना उसका तन के चिप-चिप ।
छोटे-छोटे हाथों की हलचल,
नव प्रभा में बोली चंचल ।

उसके, सिर पर हाथ फिराऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।8।।

आकर कहना स्कूल कहानी,
सुनते जाऊँ वो स्नेहिल जुबानी ।
कोई शिकायत, कोई शिकवा,
कक्षा-कक्ष के वो सब मितवा ।
भूले बिखरे, गीत उसके गाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।9।।

धूप ; छाँव से आकर सोना,
हस्त-पंखुड़ियों से कपड़े धोना ।
करवट बदल-बदल निहारे,
नीड़ का पंछी चहक पुकारे ।
आज भरी दुपहरी, गुदडी उसकी बिछाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।10।।

स्वप्न में भोली सूरत देखूँ,
बाल कृष्ण की मूरत देखू ।
कर गया वो कोख को खाली,
दे गया हर आँख को पानी ।
वो छोटी, पकड़ अँगुली घुमाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।11।।

पलकों के नीचे दो नयना,
अस्त हुआ वो चाँद सा गहना ।
बोले थे वो ओठ सुहाने,
मासूमियत के हजार बहाने ।
हुई सुर्ख, आँखों को टपकाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।12।।

हसके-पीछे उसका गाना,
प्रतीकों को देख-देख सुख पाना ।
क्या-क्या करता ये दोहराना,
बाहों में भरके गला भर आना ।
टुकड़े, कलेजे को संवारुँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।13।।

आज कंधों पर मुर्दा-डोली,
एक जलू मैं बनकर होली ।
आई दिवाली दीप जलायें,
छोटे-बच्चे हर्ष मनायें ।
बुझा दीप, मैं जलाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।14।।

सिमटी दुनियाँ जहाँ मैं,
अवबोध नहीं आज कहाँ मैं ।
ढूँढ़ रही हूँ एक सलोना,
टूटा मेरा अनमोल खिलौना ।
भरी नदिया, दर्द दिखाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।15।।

हर राही को गुजरता देखूं,
मेरे लाल को न आता देखूं ।
उसकी बोली-उसकी झोली,
पल-पल करता आँख मिचोनी ।
किसको, भेद ये बतलाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।16।।

फटी धरती, जब लाल गड़ा है,
सूने आँगन रुखा पेड़ खड़ा है ।
उस पर नहीं है चहल बखेड़ा,
नीरव बना है नीड़ अब मेरा ।
सूखा खून, जिगर में चलवाऊँ कैसे ?
उसे भुलाऊँ कैसे ? ।।17।।

चित्र प्रदर्शिनी

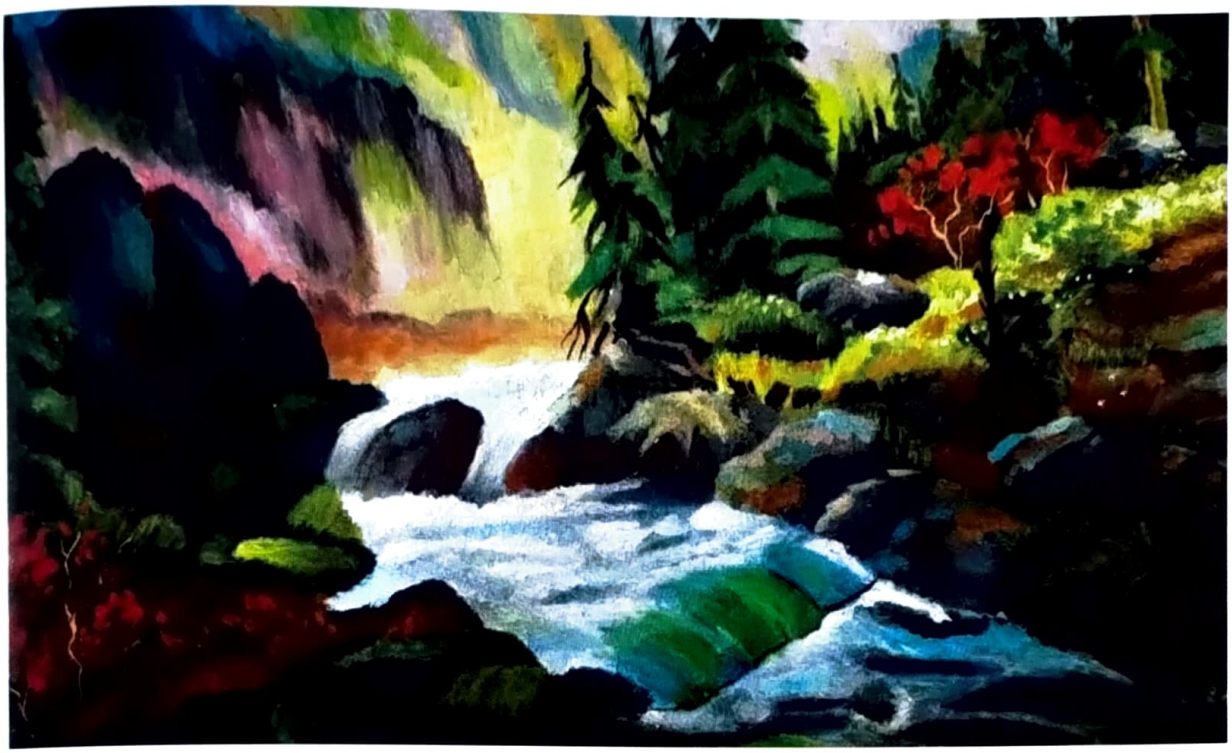

चित्रकार – **श्रीमती सुप्रिया एस. पाबलकर,** धर्मपत्नी श्री. एस. पी. पाबलकर, सहायक आयुक्त

श्री. संजय क्षीरसागर, सीमाशुल्क अधीक्षक (निवारक) द्वारा यह पेंटिंग ऑइल पेंट और कैनवास पर बनाई गई है। श्री क्षीरसागर की इस पेंटिंग को जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट्स की ओर से सराहा गया था। वर्तमान में यह कृति केंद्रीय उत्पादशुल्क अंचल–I भवन, चर्चगेट, मुंबई के मुख्य सम्मेलन कक्ष लगाई गई है।

प्रतिभावान पाबलकर

सीमाशुल्क मुंबई परिवार अनेकों बहुमुखी प्रतिभाओं का समागम है, उनमें से एक हैं श्री एस. पी. पाबलकर, सहायक आयुक्त। इन्होनें मुंबई सीमाशुल्क की सेवा के 40 वर्ष पूरे किए हैं। पिछले 16 वर्षों से श्री. पाबलकर विभिन्न प्रकार के मोटीवेशनल व्याख्यान, डायनेमिक योगा, तिब्बतियन योगा, नियुरोबिक्स, वॉटर थेरेपी और विभिन्न प्रकार की चिकित्सीय तकनीक (हीलिंग टेक्निक) पर काम कर रहे हैं और लोगो के समक्ष इसका प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कर रहे हैं।

वह विभिन्न प्रकार की बीमारियों के उपचार के लिए जरूरतमंन्द लोगो की मदद कर रहे हैं और अब तक घुटने की समस्या एवं घुटने बदलने के ऑपरेशन, पीठ का दर्द, कंधे के दर्द और अन्य प्रकार से ग्रस्त करीब 966 लोगों की मदद कर चुके हैं। श्री. पाबलकर पानी में भावनाओं का संचार करके उसको चिकित्सीय जल में बदल देते हैं। उन्होने इस जल चिकित्सा से कई कैंसर के मरीजों, हार्ट के मरीजों, पीठ के दर्द के मरीजों का इलाज किया है। श्री. सीताराम कुमावत, निवारक अधिकारी बताते हैं कि किस तरह वे न्यरोलोजिकल बीमारी ''गुलेनबरे सिन्ड्रोम'' का शिकार हुये थे जिसमें उनके हाथ और पैरों ने अचानक काम करना बंद कर दिया था और बहुत से इलाज के बाद भी वह ठीक नहीं हो पा रहे थे वह अस्पताल में भर्ती थे किन्तु आवेशित जल चिकित्सा से उनके शरीर के अंगो ने तुरन्त काम करना शुरु कर दिया और वह स्वस्थ हो गए। इसी तरह से नई दिल्ली की श्रीमती पूनम चौबे भी तेज बुखार से पीड़ित थी और २० दिनों से अस्पताल में थीं किन्तु श्री पाबलकर जी की आवेशित जल चिकित्सा से उन्होने उसे ठीक कर दिया। श्री. पाबलकर का यह दावा है कि उन्होने सुदूर जल चिकित्सा (रिमोट वॉटर थेरेपी) के द्वारा उन्होने मुंबई से ही बैठे-बेठै दिल्ली में जल आवेशित किया और श्रीमती पूनम चौबे ठीक हो गई। उनके अनुसार किसी सुदूर स्थित व्यक्ति के नाम, आयु और पानी कहाँ रखा गया है, के द्वारा पानी आवेशित किया जाता है। श्री. पाबलकर द्वारा शरीर को आराम देने एवं तनाव मुक्त करने के लिए फ्लोटिंग थेरेपी भी प्रतिपादित की है जिसमें पानी एवं नमक को निश्चित अनुपात में मिला कर एक चपटे टब में डालने पर जब कोई व्यक्ति उस पर लेटता है तो उसका शरीर पानी में तैरने लगता है और उसको आराम की अनुभूति होती है और तनाव तथा बदन दर्द समाप्त हो जाता है।

बेलापुर, नवी मुंबई निवासी श्री पाबलकर संभवत: एकमात्र व्यक्ति हैं जो पालतू जानवरों और इन्सानों पर वॉटर थेरेपी का प्रयोग कर रहे हैं और आश्चर्यजनक तरीके से यह थेरेपी सफल भी हो रही है। जैसा की सर्वविदित है कि हम इंसानो की तरह पालतू जानवर अपने स्वाभाव और

वॉटर थेरेपी पर व्याख्यान देते
श्री पाबलकर

Now, a spiritually charged water therapy for your pet

Calms Dogs And Helps Them Deal With Grief As Well As Absent Owners

ONE OF A KIND

जानवरों पर चार्जड वॉटर थेरेपी
के होनेवाले असर पर
टाइम्स ऑफ इंडिया की टिप्पणी

शरीर को तनावमुक्त करने की
फ्लोटिंग थेरेपी का प्रदर्शन

मूड को परिलक्षित नहीं कर सकते किन्तु घर के वातावरण और माहौल के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं। उनके मूड के बदलाव और उनके व्यवहार के मध्य संतुलन बनाने में इस वॉटर थेरेपी बहुत कारगर सिध्द होती है। वह पानी में ऊर्जा प्रवाहित करते हैं। वह शेगाँव के श्री गजानन महाराज के सच्चे भक्त हैं जो कि श्री साईबाबा के समकालीन थे।

इंसान के लिए यदि मान लिया जाये कि इसमें मनोविज्ञान सम्मलित है पर जानवरों के लिए यह कैसे एक मनोविज्ञान हो सकता है ? यह एक प्रश्न है। आवेशित पानी (चार्जड वॉटर) पीने से पालतू जानवर शांत हो जाते हैं। श्री पाबलकर के अनुसार ज्यादातार पानी मुन्सिपल पाईपलाइनों एवं नलों से आनेवाले पानी में ऊर्जा समाप्त हो चुकी होती है। इसी तरह से बॉटल में मिलनेवाला पानी की बॉटल का पानी पीने से हमे तृप्ति नहीं मिलती है और हम तारो ताजा नहीं महसूस करते हैं जितना कि हमें झरने या बहती हुई नदियों के पानी से प्राप्त होती है।

पुलिस आयुक्त, नवी मुंबई के कार्यालय में डाइनेमिक योगा पर कार्यशाला का संचालन करते श्री पाबलकर

आवेशित पानी के इस्तेमान से पालतू जानवर शांत हो जाते हैं और उनकी उग्रता बहुत हद तक कम हो जाती है। इस तरह की चिकित्सा किसी पालतू जानवर के लिए बहुत अच्छी होती है विशषतौर पर जब पालतू जानवर पर जब वह अपने मालिक के आसपास नहीं होते और वे मनोवैज्ञानिक तौर पर उदास हो जाते हैं। यदि किसी घर में कोई मृत्यु हो जाती है, तो सर्वप्रथम हमारी पालतू जानवर ही होते हैं जिनको इसका पहले से भास हो जाता है। वे बेचैन हो जाते हैं। हमारे पालतू जानवर घर के वातावरण के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं और घर के सदस्यों के मध्य होनेवाले लगातार झगड़ो और बहस से उनके तनाव में और भी वृध्दि हो जाती है। वे अपने चित परिचितों और मालिक की गैर हाजिरी पर बहुत असुरक्षित महसूस करते हैं, जिनको वे निस्सावार्थ भाव से प्रेम करते हैं। आवेशित जल पिलाने का प्रयोग जानवरों में बहुत सटीकता से असर करता है।

सी.आई.एस.एफ. के जवानो को योग प्रशिक्षण देते श्री पाबलकर

विलक्षण प्रतिभा के धनी श्री पाबलकर ने बहुत से सरकारी संस्थानो में योग कार्याशाला आयोजित की हैं जिसमें उन्होने 'आसन योग' से ज्यादा मन को शांत करनेवाले 'ध्यान योग' पर ज़ोर दिया है। ऐसी संस्थानों / सरकारी कार्यालयों में जहां शारिरिक और मानसिक तनाव ज्यादा है, वहाँ ध्यान योग का सत्र चलाते हैं। अपने उच्च कोटि के ध्यान सत्र में वह इसके अलावा अपनी सोच में साकारात्मक बढ़ाने के लिए प्रेरक विचारों (मोटिवेशनल थॉट) का भी प्रसार करते हैं। जवाहरलाल नेहरू सीमाशुल्क भवन, न्हावा शेवा को ऐसे प्रतिभाशाली अधिकारी पर गर्व है।

अधिकारियों के बच्चों की कृतियाँ

सप्तऋषि क्षीरसागर
आयु - 12 वर्ष
सुपुत्री श्री संजय क्षीरसागर,
सीमाशुल्क अधीक्षक

श्रेया सक्सेना
आयु - 6 वर्ष
सुपुत्री श्री रूपेश एस. सक्सेना
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

ऋषभ राठौर
सुपुत्र श्रीमती कीर्ति राठौर
सीमाशुल्क अधीक्षक

अन्तराष्ट्रीय सीमाशुल्क दिवस 2016 समारोह की झाँकियां

Photo's by : MUKUND ASHAR - 9869178887

श्री मनोज दास, सीमा शुल्क अधीक्षक (निवारक),
जे.एन.सी.एच. न्हावा-शेवा के द्वारा कैमरे में कैद पक्षियों
का स्वर्ग कहे जाने वाले स्थानीय उरण क्षेत्र,
रायगड के पक्षी जीवन की झांकी

उरण क्षेत्र में विचरण करते पेंटेस स्टॉक्स

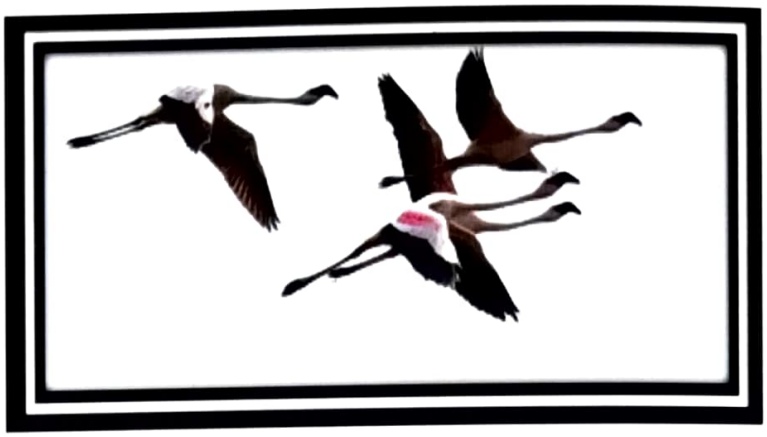

सेंट्रल एशिया से माइग्रेटड करके आए फ्लैमिंगो

सर्दियों के मौसम में सैकड़ो मिल की दूरी तय
करके आए माइग्रेटड सीगल्स

सैंड पाइपर

उरेशियन ई ग्रेट

ग्रीन बी ईटर

ग्रीन बी ईटर

Book Printed by : MUKUND ASHAR - 9869178887